दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

पेज 4

पेज 7

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 83 | ग्वालियर शनिवार, 31 दिसम्बर 2022 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

मौत का दावा

आरोपी दवा कंपनी के खिलाफ कड़ा एक्शन!

उज्बेकिस्तान में भारतीय कफ सिरप से बच्चों की मौत का दावा किया जा रहा है. केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय इस पूरे मामले पर अपनी नजर बनाए हुए है. स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने शुक्रवार (30 दिसंबर) को ट्विटर के जरिए मामले को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी. उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग की टीम ने खांसी की दवाई डॉक-1 मैक्स में अशुद्धि की रिपोर्ट के मद्देनजर मैरियन बायोटेक की सभी दवाओं के उत्पादन को 29 दिसंबर रात से रोक लगा दी है. इस मामले में आगे की जांच जारी है. बता दें कि उज्बेकिस्तानमें 18 बच्चों की कथित तौर पर खांसी की दवाई से मौत के बाद से नोएडा की कंपनी मैरियन बायोटेक सवालों के घेरे में है. उज्बेकिस्तान के इस दावे के बाद भारत सरकार अलर्ट हो गई है. केंद्र की सरकार ने उज्बेकिस्तान में बच्चों की मौत को इंडियन कफ सिरप से जोड़ने के बाद हताहत होने वाले बच्चों को लेकर रिपोर्ट मांगी है.

स्वास्थ्य विभाग ने लिया एक्शन-उज्बेकिस्तान में 18 बच्चों की कथित मौत के दावों को लेकर केंद्रीय स्वास्थय विभाग इस मामले में किसी भी तरह की लापरवाही नहीं बरतना चाहता. केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया खुद इस मामले पर नजर बनाए हुए हैं. उन्होंने कहा था कि दवा कंपनी की जांच के आधार पर आगे कदम उठाया जाएगा. उज्बेकिस्तान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने आरोप लगाया है कि बच्चों की मौत डॉक-1 मैक्स दवा पीने से हुई. उत्तर प्रदेश सरकार के एक अधिकारी ने बताया कि मैरियन बायोटेक कंपनी भारत में खांसी की दवा डॉक -1 मैक्स नहीं बेचती और इसका निर्यात केवल उज्बेकिस्तान को किया गया है. मांडविया ने बताया कि नोएडा स्थित कंपनी के परिसर से खांसी की दवा के नमूने लिए गए हैं और चंडीगढ़ स्थित रीजनल ड्रग टेस्टिंग लेबोरेटरी (आरडीटीएल) को जांच के लिए भेजे गए हैं. इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग की टीम ने खांसी की दवाई डॉक - 1 मैक्स में अशुद्धि की रिपोर्ट के मद्देनजर मैरियन बायोटेक की सभी दवाओं के उत्पादन को गुरुवार (29 दिसंबर) रात से रोक दी है.

उज्बेकिस्तान ने किया 18 बच्चों की मौता का दावा-उज्बेकिस्तान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि मरने वाले 18 बच्चों ने डॉक-1 मैक्स सिरप का सेवन किया था. इसका निर्माण नोएडा स्थित मैरियन बायोटेक ने किया था. स्वास्थ्य मंत्रालय ने दावा किया की जांच में पाया गया कि मृत बच्चों ने अस्पताल में भर्ती होने से पहले इस दवा को 2-7 दिनों के लिए दिन में 3-4 बार लिया था. जिसकी वजह से उनकी मौत हुई. अब उज्बेकिस्तान सरकार ने भारत सरकार से इस मामले में जांच करने और आरोपी कंपनी के खिलाफ कार्रावई करने की मांग की है.

बड़ा झटका

बिहार बीजेपी के बड़े नेता ने पार्टी से दिया इस्तीफा

पटना। बिहार में भारतीय जनता पार्टी को बड़ा झटका लगा है. बिहार बीजेपी के प्रदेश उपाध्यक्ष राजीव रंजन ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता और पद से इस्तीफा दे दिया है. शुक्रवार को राजीव रंजन ने पत्र लिखकर बिहार बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष संजय जायसवाल को उन्होंने इसकी जानकारी दी है. इस दौरान उन्होंने अपनी बातों में भड़ास भी निकाली है. राजीव रंजन ने पार्टी पर कई आरोप लगाए हैं. पत्र लिखकर राजीव रंजन ने कहा कि बिहार बीजेपी आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों व आदर्शों से पूरी तरह भटक चुकी है. प्रधानमंत्री के 'सबका साथ-सबका विकास' की बात केवल कहने तक ही सीमित हो चुकी है. आज पार्टी में पिछड़ा/अतिपिछड़ा व दलित समाज के विरोधी तत्व हावी हो चुके हैं. हालात यह है कि जो नेता पिछड़े समाज के नहीं है वह भी इस समाज के नाम पर दशकों से सत्ता सुख भोग रहे हैं. आगे राजीव रंजन ने अपनी बात कहते हुए लिखा कि इनके चहेते चंद नेताओं के अतिरिक्त पार्टी में पिछड़ा/अतिपिछड़ा व दलित समाज के नेताओं का उपयोग केवल झंडा ढोने तक ही सीमित कर दिया गया है, जो प्रधानमंत्री की नीतियों की सरासर उपेक्षा है. इसी तरह पार्टी के एजेंडा सिर्फ और सिर्फ पटना तक ही सीमित रह गया है. नालंदा जिले की बात तक नहीं होती. यह सरासर नालंदा व अन्य जिलों की उपेक्षा है. क्षेत्र में जनता द्वारा पूछे जाने पर हम जवाब तक नहीं दे पाते. राजीव रंजन ने अनुरोध करते हुए लिखा कि इस त्यागपत्र को स्वीकार किया जाए और उन्हें पार्टी प्रदत दायित्वों से मुक्त किया जाए. यह भी कहा कि कई और भी विषय हैं जिन पर उनका पार्टी से मतैक्य नहीं है. कहा कि कई विषयों को वह पत्र में नहीं लिख रहे हैं, लेकिन आने वाले समय में वह उसे उठाते रहेंगे. लिखा कि पार्टी के पद और सदस्यता से अपना त्यागपत्र देता हैं.

एक्सीडेंट

ऋषभ पंत के एक्सीडेंट के बाद तुरंत मदद करने पहुंचे लोग

नई दिल्ली। टीम इंडिया के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत कार दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गए. यह हादसा रुड़की के करीब मोहम्मदपुर जट के पास हुआ. दिल दहला देने वाली भयानक दुर्घटना में पंत बाल-बाल बच गए. इस दौरान उनके माथे, पीठ और पैरों में काफी चोटें आईं. घटनास्थल पर पहुंची हरिद्वार पुलिस ने पंत को फौरी तौर पर पहले रुड़की के अस्पताल में भर्ती कराया. उसके बाद बेहतर इलाज के लिए उन्हें देहरादून रेफर कर दिया. जहां पंत का इलाज चल रहा है. हालांकि जिस वक्त यह दुर्घटना हुई उस समय कुछ लोग पंत की मदद करने पहुंच गए, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है. दुबई से दिल्ली लौटे पंत अपनी मां से मिलने रुड़की जा रहे थे. इस दरम्यान उनकी कार मोहम्मदपुर जट के पास रेलिंग से टकरा गई. हादसे के बाद कार में आग लग गई और वह धू-धू कर चलने लगी. पंत जैसे-तैसे निकलकर बाहर आ पाए. लेकिन ज्यादा चोटिल होने की वजह से ठीक से चल नहीं पर रहे थे. ऐसे में लोग कुछ उनके पास पहुंचे और उन्हें उठाकर सुरक्षित स्थान पर ले गए. इस घटना का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. बांग्लादेश से टेस्ट सीरीज खेलकर वापस लौटे ऋषभ पंत इन दिनों ब्रेक पर हैं. कुछ दिन पहले वह क्रिसमस सेलिब्रेट करने दुबई गए थे. जहां उन्होंने एमएस धोनी और उनकी पत्नी साक्षी के साथ क्रिसमस मनाया था.

भावुक मन, आंखें नम... पंचतत्व में विलीन हुईं मां हीराबेन तो निहारते रहे पीएम मोदी

प्रधानमंत्री मोदी की मां हीराबेन का गांधीनगर के एक श्मशान घाट में अंतिम संस्कार किया गया. पीएम की मां हीराबेन का शुक्रवार को तड़के निधन हो गया. वह 100 साल की थीं. मां हीराबेन के अंतिम संस्कार के दौरान पीएम मोदी बेहद शांत दिखाई दिए. उनकी आंखों में नमी दिखाई दी. पीएम मोदी ने पहले अपने छोटे भाई पंकज मोदी के घर पर पहुंचे, यहां मां को अंतिम प्रणाम किया. फिर पीएम मोदी मां की अंतिम यात्रा पर आगे कंधा देते हुए दिखाई दिए. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां हीराबेन की बुधवार को तबीयत बिगड़ गई थी, जिसके बाद उन्हें अहमदाबाद के यूएन मेहता अस्पताल में भर्ती कराया गया था. मां के गुजरने की खबर मिलते ही पीएम नरेंद्र मोदी तुरंत अहमदाबाद पहुंचे. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां हीराबेन मोदी को गांधीनगर में अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया. जहां पूरे रीति-रिवाज के साथ पीएम मोदी और उनके भाईयों ने हीराबेन का अंतिम संस्कार किया. पीएम मोदी अपने परिवार के साथ उसी एंबुलेंस में बैठकर गांधी नगर के सेक्टर 30 स्थित श्मशान के लिए निकले, जिसमें मां हीराबेन का शव था. पीएम मोदी के परिवार ने कहा है कि हम इस कठिन समय में उनकी प्रार्थनाओं के लिए सभी का धन्यवाद करते हैं. सभी से हमारा विनम्र अनुरोध है कि दिवंगत आत्मा को अपने विचारों में रखें और अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम और प्रतिबद्धताओं को जारी रखें. हीराबा को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी. पीएम मोदी की मां हीराबेन के अंतिम संस्कार में परिवार के लोगों के साथ गुजरात बीजेपी के कई नेता भी शामिल हुए. इस दौरान गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल भी दुख की इस घड़ी में पीएम मोदी का सांत्वना देने पहुंचे.

राहुल गांधी ने प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया

सुरक्षा उल्लंघन मामले पर दिल्ली पुलिस का जवाब

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और मौजूदा सांसद राहुल गांधी के सुरक्षा उल्लंघन मामले पर दिल्ली पुलिस ने जवाब दिया है. 24 दिसंबर को राहुल गांधी की अगुवाई में कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में थी. यात्रा के दिल्ली चरण में सुरक्षा में उल्लंघन का आरोप पार्टी नेताओं की ओर से लगाया गया था. दिल्ली पुलिस ने केंद्रीय गृह मंत्रालय को एक रिपोर्ट सौंपी है, जिसमें कहा गया है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ही प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया और सुरक्षा के पूरे इंतजाम थे. इससे पहले केंद्रीय अर्धसैनिक बल की ओर से भी स्पष्ट किया गया कि राहुल गांधी की सुरक्षा में कोई कमी नहीं रखी गई. कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर कहा था कि शनिवार (24 दिसंबर) को दिल्ली में प्रवेश करने के बाद यात्रा की सुरक्षा से कई बार समझौता किया गया. उन्होंने लिखा कि सरकार को बदले की राजनीति में न पड़कर कांग्रेस नेताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए. केसी वेणुगोपाल ने पत्र में लिखा था कि यात्रा में कई मौकों पर सुरक्षा में चूक हुई. दिल्ली पुलिस भीड़ को काबू करने और राहुल गांधी के आसपास घेरा बनाए रखने में पूरी तरह नाकाम रही जबकि राहुल को जेड प्लस सुरक्षा दी गई है.

कांग्रेस का दिल्ली पुलिस पर आरोप-गृह मंत्री शाह को लिखे पत्र में केसी वेणुगोपाल ने कहा था कि हालत यहां तक हो गई कि भारत यात्रियों को राहुल के आसपास घेरा बनाना पड़ा और दिल्ली पुलिस मूकदर्शक बनी रही. कांग्रेस नेता ने पत्र के जरिये आग्रह किया कि पंजाब और जम्मू-कश्मीर जैसे संवेदनशील राज्यों में राहुल और भारत जोड़ो यात्राकी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाएं.

राहुल गांधी खुद सुरक्षा घेरा तोड़ते देखे गए- दिल्ली पुलिस-कांग्रेस की ओर पत्र मिलने के बाद केंद्रीय गृह

मंत्रालय ने दिल्ली पुलिस से रिपोर्ट मांगी थी. सभी इकाइयों- सुरक्षा, यातायात और दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है. दिल्ली पुलिस ने कहा है कि सादा वर्दी में पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया था और राहुल गांधी के लिए सुरक्षा घेरा बनाया गया था. पुलिस ने आरोप पर पलटवार किया कि राहुल गांधी खुद सुरक्षा घेरा तोड़ते हुए देखे गए थे. बता दें कि गुरुवार (29 दिसंबर) को सीआरपीएफ ने भी कहा की राहुल गांधी ने कई मौकों पर सुरक्षा प्रोटोकॉल तोड़ा है. सीआरपीएफ की ओर से कहा गया कि राहुल गांधी ने 2020 से 113 बार प्रोटोकॉल तोड़ा है.

कोरोना के खतरे को रोकने की तैयारी

चीन-जापान समेत दुनिया के कई देशों में कोरोना वायरस के प्रकोप से कोहराम मचा हुआ है. कोरोना के खतरे को भांपकर भारत सरकार ने इन देशों की यात्रा करने वाले लोगों के लिए संशोधित कोविड गाइडलाइन जारी की है. अब चीन, सिंगापुर, हांगकांग, कोरिया, थाईलैंड और जापान आदि 6 देशों से आने वाले लोगों की निगेटिव जांच रिपोर्ट अनिवार्य कर दी गई है. संशोधित कोविड गाइडलाइन में कई और बातों का जिक्र भी किया गया है. भारतीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि नए साल की शुरुआत यानी एक जनवरी 2023 से चीन, सिंगापुर, हांगकांग, कोरिया गणराज्य, थाईलैंड और जापान की सभी इंटरनेशनल पलाइट्स में आने वाले यात्रियों के लिए आरटी-पीसीआर निगेटिव जांच रिपोर्ट अनिवार्य होगी, जो उन्हें एयरपोर्ट से निकलने से पहले ही दिखानी होगी. मंत्रालय ने कहा कि एयरलाइंस को निर्देशित किया जाता है कि वे अपनी चेक-इन वर्किंग कैपेसिटी में कुछ बदलाव करें और चीन समेत छह देशों की यात्रा करने वालों में से केवल उन यात्रियों को बोर्डिंग पास जारी करें, जिन्होंने एयर सुविधा पोर्टल पर सेल्फ-डिक्लियरेशन फॉर्म जमा किया है.

अच्छे रिटर्न का झांसा देकर महिला से 10 लाख रुपये की ठगी

महाराष्ट्र के ठाणे जिले में एक महिला के साथ ठगी का मामला सामने आया है. जहां 57 वर्षीय महिला से एक व्यक्ति पर विदेशी मुद्रा व्यापार में निवेश कराने का झांसा देकर कथित तौर पर 10 लाख रुपये से अधिक लूटने का मामला दर्ज कराया है. पुलिस ने शुक्रवार को इस बात की जानकारी दी. अंबरनाथ पुलिस थाने के एक अधिकारी ने बताया कि एक शिकायत के आधार पर पुलिस ने बुधवार 28 दिसंबर को सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया. पीड़ित के मुताबिक, उसे जुलाई 2021 में व्हाट्सएप पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा व्यापार के बारे में एक संदेश मिला और एक निवेश कंपनी का मैनेजर होने का दावा करने वाले आरोपी ने उससे संपर्क किया.

आरोपी ने अच्छे रिटर्न का किया वादा-पुलिस ने कहा कि आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा व्यापार में अच्छे रिटर्न का वादा किया, जिसके बाद पीड़िता ने जुलाई और नवंबर 2021 के बीच 10.49 लाख रुपये का निवेश किया. जानकारी के अनुसार, पीड़िता को कंपनी का एक ऐप मुहैया कराया गया था, जहां वह डॉलर में अपना निवेश देख सकती थी और छोटी-छोटी रकम निकाल सकती थी. हालांकि, कुछ समय बाद उसे पैसे मिलने बंद हो गए.

ऐसे हुआ खुलासा-पुलिस के अधिकारी ने बताया कि महिला को जल्द ही एहसास हुआ कि आरोपी उसके मैसेज का कोई जवाब नहीं दे रहा है. जिसके बाद उसने कंपनी के बारे में पड़ताल करना शुरू किया. तब जाकर पीड़िता को पता चला कि जिस कंपनी के लिए उसने काम करने का दावा किया था, वह अस्तित्व में नहीं थी. फ्रॉड का संदेह होने पर पीड़िता ने इस बात की जानकारी पुलिस को दी.

भूपेश बघेल की कैबिनेट का फैसला

अप्रैल 2022 से मिलेगा पुरानी पेंशन स्कीम का लाभ

छत्तीसगढ़ में एक साल फ्री राशन दिया जाएगा. मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कैबिनेट की बैठक में यह फैसला लिया. जनवरी से दिसंबर तक राशनकार्ड धारियों को राशन बिना पैसे के दिया जाएगा. इसके अलावा छत्तीसगढ़ में जुआ पर रोक लगाने का कैबिनेट में फैसला हुआ. साथ ही सरकारी कर्मचारियों की अप्रैल 2022 से पुरानी पेंशन स्कीम का लाभ मिलेगा. दरअसल शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक हुई. इस बैठक में राज्य के अधिकारियों-कर्मचारियों के एनपीएस की राशि वापस करने के केन्द्र सरकार की मनाही के बाद भी पुरानी पेंशन योजना का लाभ देने का निर्णय लिया गया. इसके तहत सरकारी कर्मचारियों को 1 अप्रेल 2022 से ही छत्तीसगढ़ सामान्य भविष्य निधि का सदस्य माना जाएगा. 1 नंवबर 2004 या उसके बाद नियुक्त तिथि से 31 मार्च 2022 तक एनपीएस खाते में जमा कर्मचारी अंशदान और उस पर अर्जित लाभांश सरकारी कर्मचारी को एनपीएस नियमों के तहत दिया जाएगा.

एक साल तक फ्री मिलेगा राशन-कैबिनेट बैठक में एक बड़ा निर्णय लिया गया. इसके अनुसार अब 2013 तक जारी राशनकार्डो को जनवरी 2023 से दिसंबर 2023 तक राशन फ्री में मिलेगा. वहीं बैठक में 2012 के अंतर्गत जारी अंत्योदय और प्राथमिकता राशनकार्डो में निःशुल्क खाद्यान्न वितरण करने का

निर्णय लिया गया. राज्य के सभी जिले में राज्य योजना के राशनकार्डधारियों (एपीएल को छोड़कर) को फोर्टिफाईड चावल वितरण करने का निर्णय लिया गया. इससे 26.42 करोड़ रुपए की राशि व्यय होगी.

मुख्यमंत्री वृक्ष संपदा योजना की होगी शुरुआत-वाणिज्यिक वृक्षारोपण से पर्यावरण सुधार और किसानों की आय में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया. राज्य में मुख्यमंत्री वृक्ष संपदा योजना प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया. इस योजना के तहत राज्य में प्रतिवर्ष 36 हजार एकड़ के मान से 5 साल में 1 लाख 80 हजार एकड़ मे क्लोनल नीलगिरी, टिशु कल्चर सागौन और बांस का रोपण किया जाएगा. इसके आलावा मिलिया डुबिया सहित अन्य आर्थिक लाभकारी प्रजातियों के 15 करोड़ पौधों का रोपण का लक्ष्य रखा गया है. इस योजना का लाभ सभी वर्ग के इच्छुक भूमि स्वामी सहित सरकारी, अर्धसरकारी, शासन की स्वायत्त संस्थाएं, निजी शिक्षण संस्थाएं, निजी ट्रस्ट, गैर सरकारी संस्थाएं पंचायतें और लीज लेंड होल्डर जो अपने भूमि में रोपण करना चाहते है, ले सकेंगे.

नया रायपुर में निवेशकों बढ़ावा मिलेगा-नया रायपुर अटल नगर में निवेशकों को आकर्षित करने के लिए सेक्टर के भीतर क्षेत्रफल श्रेणी के आधार पर भूखण्डों के लीज प्रीमियम निर्धारण के लिए अधोसंरचना विकास शुल्क का पुर्ननिर्धारण किया गया. इसके तहत 50 एकड़ से अधिक भूखण्ड क्षेत्रफल के लिए वर्तमान अधोसंरचना विकास शुल्क प्रति वर्ग मीटर 500 रुपए को घटाकर 100 रुपए प्रति वर्गमीटर करने का निर्णय लिया गया.

नए साल पर पब्लिक प्लेस पर हुड़दंग मचाना पड़ेगा भारी

नई दिल्ली। नए साल को लेकर लोगों में काफी उत्साह देखने को मिल रहा है. नए साल के जश्न को लेकर यूपी पुलिस ने निर्देश जारी किए हैं. पुलिस ने कहा है कि नए साल के दिन भीड़ वाले जगहों पर हुड़दंग मचाने पर कार्रवाई हो सकती है. वहीं, यदि कोई शराब पीकर गाड़ी चलाता मिला तो उसपर सख्ती से कार्रवाई की जा सकती है. एडीजी कानून-व्यवस्था प्रशांत कुमार ने इस बारे में जानकारी दी है. एडीजी कानून-व्यवस्था प्रशांत कुमार ने बताया, नए साल का त्योहार पूरी सरलता और शालीन तरीके से मनाया जाए इसके लिए मुख्यालय से निर्देश जारी किए गए हैं. उसमें बताया गया है कि भीड़ वाले जगहों पर हुड़दंग न हो पाए, ड्रिंक एंड ड्राइविंग की जांच की जाएगी. उन्होंने आगे कहा, इसके साथ ही महिलाओं और बच्चियों के साथ छेड़छाड़ न हो इसको सुनिश्चित किया जाएगा. सभी जगहों पर पुलिस कर्मी तैनात रहेंगे. 1 जनवरी को सभी धार्मिक स्थलों पर काफी भीड़ देखी जाती है तो वहां पर भी सुरक्षा व्यवस्था की जाएगी. यूपी के कानपुर में पुलिस ने नए साल के जश्न के बीच कोई खलल ना पैदा हो इसके लिए प्लान तैयार कर लिया है. कानपुर के पुलिस आयुक्त बीपी जोगदंड की मानें तो हर चौराहे पर आज और कल जबर्दस्त सतर्कता बरते जाने का प्लान बनाया गया है. सभी चौराहों पर लगे सीसीटीवी कैमरों से अराजकता फैलाने वालों पर निगरानी रखी जाएगी. कानपुर में इस बार अबतक जश्न के 18 जगहों पर बड़े कार्यक्रम आयोजित होने जा रहे हैं.

कर्नाटक में अमित शाह ने भरी हुंकार

नई दिल्ली। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शुक्रवार 30 दिसंबर को कर्नाटक के मांड्या में एक जनसभा को संबोधित करते हुए अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव का बिगुल फूंक दिया है. इस दौरान उन्होंने कांग्रेस और जेडीएस पर निशाना साधते हुए उन्हें भ्रष्ट और परिवारवादी पार्टी बताया. कर्नाटक के मांड्या में एक जनसभा को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि मैंने 2018 के चुनाव की शुरुआत इसी जिले से की थी. यहां से एक मुट्ठी अनाज मांगकर कांग्रेस शासन के दौरान जिन किसानों के साथ अन्याय हुआ था, बीजेपी ने उन्हें न्याय दिलाने की शपथ ली थी. कर्नाटक की जनता ने हमें सबसे बड़ी पार्टी बनाकर यहां सरकार बनाने का मौका दिया. केंद्रीय गृह मंत्री ने आगे कहा कि हमने जेडीएस और कांग्रेस का शासन देखा है. कांग्रेस के शासन में, कर्नाटक दिल्ली के लिए

ज़रूरू बन जाता है और जेडीएस शासन में, कर्नाटक एक परिवार के लिए बन जाता है. दोनों ने हमेशा भ्रष्टाचार के माध्यम से इस भूमि के विकास को अवरुद्ध किया है. बता दें कि हाल ही में कांग्रेस ने सीएम बसवराज बोम्मई पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए राज्य में कैपेन चलाया था. इस बीच अमित शाह ने कांग्रेस को ज़रूरूबताया है.

जेडीएस और कांग्रेस को बताया भ्रष्ट-उन्होंने आगे कहा 3 सी का जिक्र किया. अमित शाह ने कहा कि जेडीएस और कांग्रेस, दोनों भ्रष्ट, अपराधी और सांप्रदायिक है. बीजेपी के सत्ता में आने के बाद कर्नाटक पीएम मोदी के नेतृत्व में विकास की छलांग लगाएगा. गौरतलब है कि गृह मंत्री अमित शाह ने ट्वीट करते हुए जानकारी दी कि मैं कर्नाटक के अपने दो दिवसीय दौरे पर बेंगलुरु पहुंच गया हूं. एक जनसभा में मांड्या के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए उत्सुक हूं. बता दें कि कर्नाटक विधानसभा चुनाव में करीब चार महीने का समय बचा है. सभी राजनीतिक दल चुनाव को लेकर यात्रा निकाल रहे हैं. कांग्रेस जहां भारत जोड़ यात्रा से पार्टी को मजबूत करने में जुटी है, वहीं जेडीएस पंचरत्न रथ यात्रा से लोगों का विश्वास जीतने जा रही है. भाजपा भी जनसंकल्प यात्रा से लोगों के और करीब आई है.

जिले की सभी आशा उषा कार्यकर्ता एवं आशा पर्यवेक्षकों ने दिया मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन

मानदेय दे और करें नियमितीकरण करेंगे तब तक काम कलम रहेगा बंद

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी। शिवपुरी जिले की समस्त आशा ,ऊषा कार्यकर्ताओ ने आज कलेक्ट्रेट परिसर मैं कलेक्टर के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम का देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में लगभग 80000 आशा को साकार करता है कार्य कर रही हैं और जिले में लगभग 2000 कार्यकर्ता हैं जो निरंतर अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभा रही हैं जिन्होंने पूर्णा काल में भी अपना घर छोड़कर अपना करतब पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाया था जिनको अब मानदेय कम से कम ड़15000 दिया जाए और उनको नियमितीकरण किया जाए क्योंकि वह भी अपनी जान जोखिम में डालकर अपना पूरा कार्य करती हैं इसके बावजूद भी उनका नियमितीकरण नहीं किया जा रहा कि संपूर्ण म.प्र में 85,000/- आशावा पर्यवेक्षक कार्यकर्ता स्वास्थ्य कार्य में शासकीय योजनाओं को बहुत ही अल्पमानदेय में स्वास्थ्य सेवाओं में चौबीसों घण्टे समर्पित भाव से संलग्न है, परन्तु हम लोगों की समस्याओं की और शासन प्रशासन ध्यान नहीं दे रहा है। हम सभी आशा ऊष पर्यवेक्षक कार्यकर्ता अपनी दयनीय स्थिति सुधार एवं निश्चित मानदेय एवं नियमितीकरण के लिये अपनी मांगे मुख्यमंत्री को बताना चाहती है **आशा ऊषा, आशा पर्यवेक्षक कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य विभाग का नियमित कर्मचारी मान्य करें**-आशा ऊषा कार्यकर्ताओ की 10.000/- रूपये प्रतिमाह निश्चित मानदेय आशा पर्यवेक्षक कार्यकर्ता को प्रतिमाह 15,000/-रु. निश्चित मानदेय दे। आशा ऊषा कार्यकर्ता को अरोग्य केन्द्र संचालित करने के लिए आंगनवाडी केन्द्र से प्रथक व्यवस्थित कक्ष की व्यवस्था की जाये जिससे आशा ऊषा कार्यकर्ता सुचारू रूप से स्वास्थ्य सेवाओं को संचालित कर सके । आशा ऊषा कार्यकर्ताओं की कार्य समय सीमा निर्धारित किया जाये। आशा-ऊषा कार्यकर्ताओं को सुचारू रूप से कार्य करने हेतु एन्टरॉईड मोबाईल उपलब्ध कराया जाये। आशा ऊषा कार्यकर्ताओं को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की आशाओं को समान मानदेय दिया जाये। आशा ऊषा आशा पर्यवेक्षक को आकस्मिक आपदा होने पर 10,00,000/- रुपये अनुदान राशि प्रदान करे जिससे उनके परिवार की परवरिश ठीक ढंग से की जाए । आशा ऊषा कार्यकर्ता के कार्यरत रहने से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवायें सुद्रण हुई है मातृ मृत्यु दर में कमी हुई है। जन संख्या नियंत्रण में भी कामयाबी मिली है। मप्र में जनसंख्या विस्फोट को रोका जा सकता है। इन सभी सेवाओं को भविष्य में भी बेहतर परिणाम हासिल हो इसके लिये कम जीविका राशि उक्त आशा- ऊषा सहयोगी को मिलन चाहिये यही हमारी मांग है।

मांगो पर ध्यान न दिया गया तो हम आम जन की हितेषी स्वास्थ्य सेवा में हमेशा अग्रसर रहने वाली आशाये परिस्थितिवस अपने हक और अधिकार की न्यूनतम मांगो को लेकर विशाल धरना प्रदर्शन करेंगे ।

शिवपुरी नगर पालिका के वार्डो के पार्षद स्वच्छता अभियान के नाम पर फैला रहे गंदगी

2-3 दिन तक पड़ी रहती हैं नालियों से निकाली गंदगी घरों के बाहर वार्डवासी होते हैं परेशान, सफाई कम और दिखावा ज्यादा

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी। शिवपुरी नगर पालिका परिषद जो कि भगवान भरोसे चल रही हैं जिसमे कोई सही काम होने की कभी की आशा कभी की ही नही जा सकती चाहे वह आम नगर पालिका से सी एम ओ साहब का हो या नगर पालिका अध्यक्ष का हो किसी कर्मचारी का हो या किसी भी वार्ड के पार्षद का हो कोई व्यक्ति अपना काम सही ढंग से नहीं करता जिसका आयोजन शिवपुरी नगर पालिका उदाहरण बनती है अपने कर्मचारी और पार्षदों के कारण शिवपुरी नगर पालिका के कार्यो में देखा जाए तो ना ही वह सही ढंग से वार्ड वासियों तक मणि खेड़ा का पानी पहुंचा पाती है पिछले 7 दिनों से बंद मड़ीखेड़ा पाइपलाइन जिसमें पानी पहुंचने की संभावना बहुत कम होती है और टूटने की संभावना बहुत ज्यादा होती है ना ही पार्षदों में इतना दिमाग है कि वह कोई कार्य सही ढंग से करवाएं। एक कार्य वार्ड नंबर 8 के पार्षद प्रदीप शर्मा द्वारा कराया गया जिसमें एक शकरी नाली को जेसीबी के माध्यम कचरा निकाला जा रहा था जिस पर नाली के ऊपर ढली सीमेंटेड पटिया तोड़ दी गई और कचरे को बीच सड़क पर छोड़ कर भाग गए अब यहां पर रहने वाले वार्ड के लोग परेशान हो रहे हैं उनके घर के आगे कचरे का इतना बड़ा ढेर लगा दिया जिससे वह घर से निकलने में भी परेशान हो रहे हैं और कचरे के ढेर पर सुअरों ने अपना जमावड़ा बना लिया है मैन राजस्थान नवाब साहब रोड से निकलने वाले रहेगी उसका चले को अपनी वाहनों से घरों के आगे और धकेल रहे हैं अब पार्षद में थोड़ी सी भी बुद्धि होती तो वह यह कार्य नगरपालिका के कर्मचारियों से करवा कर तुरन्त ट्रॉली से भरवा सकता था लेकिन जामनत मैं बाहर रह रहे पार्षद में इतनी बुद्धि कहां है जो अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करे उनको तो अपना काम बनता भाड़ मै जाये जनता बाला मुहाबरा याद रहता हैं और इनके काम की शिकायत करने पर इनका कहना होता है कि हम तो ऐसा ही करेंगे आपको जिससे शिकायत करना हो कर दो क्योंकि हमको तो 5 साल की आजादी मिल गई है लेकिन आपको भी हम बता दें कि आपके सारे काम आपको याद दिलाते रहेंगे यह भी हमारा आपसे वादा है जनता।

भाजपा युवा मोर्चा ने किया हॉकी खिलाड़ी राधिका शिवहरे को सम्मानित

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- खबर शिवपुरी मैं आयोजित भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा के कार्यक्रम में आज छत्रपति साहू जी महाराज हॉकी क्लब की युवा खिलाड़ी कुमारी राधिका शिवहरे को भा जा पा युवा मोर्चा शिवपुरी द्वारा उत्कृष्ट खेल की सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया सम्मानित की गई हॉकी खिलाड़ी राधिका शिवहरे से छत्रपति साहू जी महाराज क्लब के संचालक राहुल नरवरिया ने बताया कि इसी प्रकार और भी हॉकी के खिलाड़ी हैं जो बहुत समय से अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं और जिले में नाम रोशन कर रही है राधिका शिवहरे के सम्मानित होने से अन्य छात्रों को भी प्रोत्साहन मिलेगा और वह अपने खेल में निखार लाएंगी।

दमोह कोतवाली पुलिस कि सक्रियता के चलते रामकथा में गुम हुये मोबाइल और आभूषण आरोपियों से जब्त किये

पुष्पांजली टुडे

दमोह। दमोह शहर में इन दिनों बागेश्वर धाम सरकार के मुखारबिंद से रामकथा का आयोजन हो रहा है। और इसी को देखकर चोरो के हौसले भी लगातार बुलंद थे चोरो द्वारा कलश यात्रा में भक्तों के मोबाइल और कीमती जेवरात को चुराया गया था, लेकिन दमोह कोतवाली पुलिस कि सजकता के चलते इन चोरो को चंद दिनो में ही पकड़कर उनसे कीमती सामान को जब्त किया गया । पुलिस अधीक्षक दमोह के द्वारा थाना प्रभारी को निर्देशित किया गया था जिसे थाना प्रभारी कोतवाली द्वारा पृथकता से अपनी टीम गठित करके चोरो कि सघन तलाश कि गयी और चंद दिनों में चोरों को पकड़ लिया गया एवं उनके पास से कीमती सामान को भी जब्त कर किया गया। थाना प्रभारी द्वारा आरोपियों के नाम बताये गये जिसमें दीपक पिता कमल मोगिया उम्र 22 वर्ष ग्राम सलवन थाना गुलाबगंज जिला विदिशा, धर्म पिता बाबू मोगिया उम्र 19 वर्ष ग्राम सलवन थाना गुलाबगंज जिला विदिशा, छारी पिता बाबूराम मोगिया आदिवासी उम्र 20वर्ष ग्राम सलवन थाना गुलाबगंज जिला विदिशा से राम कथा में चोरी हुए कीमती जेवरात एवं मोबाइलों को जब्त किया गया जिसमें 2 मंगलसूत्र एवं 14 एंड्रॉयड फोन को आरोपियों के पास से बरामद किया गया हैं और जिनकी कीमत लगभग दो लाख के आसपास बताई गई है।पूछताछ करने पर सभी आरोपियों ने बताया कि उन्होंने चोरी कि घटना को भीड़ में एक साथ घुसकर किया था।

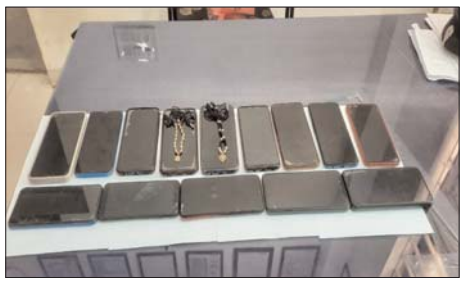

सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारी कर्मचारियों के नाम-दमोह कोतवाली प्रभारी विजय सिंह राजपूत, उप निरीक्षक रोहित द्विवेदी, गोविंद सिंह,प्रेम सिंह, प्रधान आरक्षक अनिल, आरक्षक आकाश, नवीन, देवेंद्र ठाकुर, योगेंद्र, ओमप्रकाश रैकवार, नरेंद्र, साजली, सोनाली,संगीता का विशेष सहयोग रहा ।

शिवपुरी में शोक संवेदना व्यक्त करने पहुंचे पिछोर विधायक के पी सिंह

अनिल कुशवाह प्रभारी
पुष्पांजलि टुडे

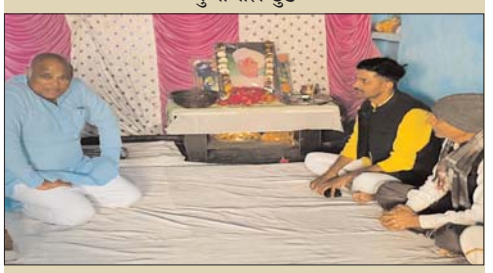

शिवपुरी-कांग्रेस के पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं वर्तमान पिछोर विधायक के पी सिंह आज शिवपुरी में अपने मिलने वाले लोगो के घर शोक संवेदना व्यक्त करने पहुंचे यहां कांग्रेस जिला अध्यक्ष पंडित श्री प्रकाश शर्मा एब कांग्रेस कार्यकर्ता ने उनका स्वागत किया जिसके बाद पिछोर विधायक के पी सिंह शिवपुरी में मजूद विजय शर्मा, विजय चौहान ,चंदू बाबूजी, एवं एमडी गुर्जर के गांव शोक संवेदना व्यक्त करने पहुंचे और शोक संवेदना व्यक्त की। साथ ही उनके छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी इसी के साथ उन्होने विनयका आश्रम पर पहुंच पहुंच कर गुरु जी की प्रतिमा के आगे सिर झुका कर नमन किया इस अवसर पर उनके संग कांग्रेस जिला अध्यक्ष पंडित श्री प्रकाश शर्मा, कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष एवा नागरिक सहकारिता बैंक के चेयरमैन वसीद अली खान, ओम प्रकाश शर्मा (जॉली) ,वाजिद खान, चंद्रकांत मामा, आजाद खान रघुराज रावत एवं शिवपुरी कांग्रेस के तमाम पार्षद मोजूद रहे।

मकान के नाप और पट्टे को लेकर वृद्ध से मारपीट जिला अस्पताल में भर्ती

पुष्पांजली टुडे

दमोह। ग्राम भूरी हिंनौती में एक मकान को लेकर परिवार में जम कर विवाद हो गया, जिसमें एक वृद्ध बुरी तरह घायल हो गया,घायल वृद्ध को तत्काल ही शहर के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया ।जब हमने घायल वृद्ध और उनके बेटे से इस मामले पर चर्चा कि तो उनका कहना था कि परिवार के चाचा लोगो द्वारा उन पर हमला किया गया है।घटना में घायल हुये कलू सिंह वृद्ध ने बताया मकान में नाम जुड़वाने को लेकर इन लोगों ने मेरे साथ मारपीट कि है,मारपीट करने वाले मेरे परिवार के लोग है। जिनके नाम लक्ष्मणसिंह राजू सिंह है। घायल वृद्ध के बेटे इमरत सिंह द्वारा बताया गया कि हम लोग तो मजदूरी पर जाते है और घर पर नहीं थे। उसी समय घर पर पटवारी आये और मकान का नाप और पट्टा बनवाने कि बात कही, जिस पर हमारे चाचा लोगों द्वारा मकान में पट्टे में चारों का नाम जुड़वाने कि बात कही लेकिन परिवार के चाचा लोगों के द्वारा सभी का नाम जोड़ने कि बात कही गयी और बात ना मानने पर उन लोगों ने मेरे पिताजी के सिर पर पत्थर एवं लात घूसो से हमला कर दिया। जिससे वह बुरी तरह घायल हो गये। हम लोगों ने इसकी शिकायत देहात थाना क्षेत्र के जबलपुर नाका चौकी में दर्ज करा दी है एवं पुलिस द्वारा मामले को गंभीरता से लेते हुये आरोपियों के खिलाफ मामला पंजीबद्ध कर लिया गया है।

जिले में पांचों विधानसभाओं पर होगा कांग्रेस का कब्जा : डॉ. गोविंद सिंह

कांग्रेस कार्यालय पर कांग्रेस की समीक्षा बैठक संपन्न

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । जिला कांग्रेस कमेटी की संगठन की समीक्षा बैठक का आयोजन जिला कांग्रेस कार्यालय पर किया गया। जिसमें मुख्य अथिति के रूप में मध्यप्रदेश विधानसभा नेता प्रतिपक्ष डाक्टर गोविंद सिंह मौजूद रहे। उनके साथ मंच पर पूर्व मंत्री चौधरी राकेश सिंह, विधायक मेवाराम जाटव, जिलाध्यक्ष मान सिंह कुशवाहा,देवाशीष जरारिया आदि लोग उपस्थित रहे।नेता प्रतिपक्ष डॉक्टर गोविंद सिंह ने संगठन की समीक्षा बैठक करते हुए उपस्थित ब्लॉक अध्यक्षों व कांग्रेस पदाधिकारियों से रायशुमारी करते हुए संगठन की जानकारी ली और अपनी बात रखते हुए कहा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को अब और अधिक मेहनत करने की जरूरत है हमे जिले से लेकर बूथ तक अपने सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ निसक्रिय कार्यकताओं को ऊर्जा देने की जरूरत है एब कांग्रेस के संगठन को मजबूत कर जिले की पांचों विधानसभाओं पर कांग्रेस पार्टी का परचम लहराना है। तथा उन्होंने अनुसूचित जाति एब पिछड़ा वर्ग के ब्लॉक ब जिला स्तरीय सम्मेलन करने की सलाह भी दी। इसी क्रम में पूर्व मंत्री चौधरी राकेश सिंह ने अपनी बात रखते हुए कहा कांग्रेस एक मजबूत पार्टी है जब से श्री कुशवाहा जिलाध्यक्ष बने है कांग्रेस को एक नई ऊर्जा मिली है उनका कार्यकाल सराहनीय रहा है,हमे भी बूथ स्तर तक समय देना चाहिए आपस में फैली बेमनुष्यता को खत्म कर मिलजुल कर जिले में पांचों विधानसभाओ पर केसे कब्जा हो रणनीति बना कर कार्य करना चाहिए। कांग्रेस अध्यक्ष मानसिंह कुशवाहा ने भी अपनी बात कहते हुए कहा जिले में भारत जोड़ो यात्रा के बाद हाथ से हाथ जोड़ो अभियान को चलाया जा रहा है जो बूथ लेवल तक कार्य करेगा एब संगठन को मजबूत करेगा।जिसकी रूप रेखा तैयार कर सभी ब्लॉक अध्यक्षों को दे दी गई हैं।जल्द ही पिछड़ा वर्ग अनुसूचित जाति के सम्मलेन भी जिला व ब्लॉक स्तर पर आयोजित किए जाएंगे। बैठक में सभी ने अपनी बात सलाह विचारों का आदान प्रदान किया और कांग्रेस को जिले में और मजबूत करने की शपथ खाई। इस मौके पर प्रदेश सचिव खिजर मोहम्मद कुरेशी,बाबा भगवानदास सेथिया,वरिष्ठ नेता राम प्रकाश यादव,वरिष्ठ नेता रामहर्ष सिंह कुशवाह,ब्रजेन्द्र सिंह कुशवाह कल्लू,रणजीत सिंह गुर्जर, वीरेंद्र यादव,गजेंद्र सिंह भदौरिया, संदीप मिश्रा, अरविंद बघेल, अमित दातरे, शुभम आजाद, जितेंद्र गुड्डू नरवरिया, सुरेंद्र सिंह चौहान, संजीव करैया, आशीष गुर्जर, प्रदीप यादव, डॉ रणवीर यादव, राजीव कौशिक सहित कई पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

रोटरी क्लब एटा के सौजन्य से होगा वस्त्र वितरण कार्यक्रम

ब्यूरो सोनू कुमार माथुर

एटा। रविवार को समय दोपहर 12 बजे स्थान स्मार्ट शॉप जी टी रोड एटा पर रोटरी क्लब एटा के द्वारा ठंड की ठिठुरन से बचाने के लिए वस्त्र हीनो को गर्म वस्त्र बाटने के लिए आगे आई है रोटरी क्लब एटा। जिसमे अपर जिला अधिकारी राजस्व एवं वित्त श्री आयुष चौधरी जी एवं अपर पुलिस अधीक्षक धनंजय कुशवाहा जी अपनी सेवा देंगे, यह जानकारी मीडिया कोऑर्डिनेटर साजन देव वार्ष्णेय ने दी । उन्होंने बताया कि हमारी रोटरी क्लब एटा एक सामाजिक संस्था है जो समाज के हित के लिए बढ़-चढ़कर हर समय सभी के लिए तत्पर तैयार रहती है, इस कार्यक्रम के संयोजक अनंत गुप्ता है इसमें उपास्थित अध्यक्ष नीरज गुप्ता, सचिव सौरभ कुमार, कोषाध्यक्ष सचिन गुप्ता, अनुज गुप्ता, कीर्ति जैन (सनी), स्वागत पचौरी, राहुल गुप्ता आदि।

सम्मेद शिखर जी को पवित्र क्षेत्र घोषित किये जाने दिया ज्ञापन

पुष्पांजली टुडे

दमोह। भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन देकर सम्मेद शिखरजी को पवित्र क्षेत्र घोषित करने कि मांग की है।भाजपा जिला उपाध्यक्ष अमित बजाज ने जानकारी देते हुए बताया की संपूर्ण भारत वर्ष की जैन समाज कि आस्था का केंद्र तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की पवित्रता नष्ट करने वाली झारखंड सरकार की अनुशंसा पर केंद्रीय वन मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना 2795, 12 अगस्त 2019 को तत्काल प्रभाव से रद्द किया जाए। साथ ही पर्वतराज और मधुबन को मांस मदिरा बिक्री से मुक्त किया जाए पर्वतराज की वंदना मार्ग को अतिक्रमण वाहन संचालन सामग्री बिक्री मुक्त कर सामान्य जांच हेतु सीआरपीएफ, सीसीटीवी कैमरे सहित चेकपोस्ट एवं चिकित्सा सुविधा युक्त बनाया जाए।

सूचना

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के ग्वालियर चंबल संभाग के सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है दिनांक 1 जनवरी 2023 को आसन नदी के किनारे भोन पुरा चिराई गोहद जिला भिण्ड मे सुबह 10ः बजे श्रीमद् भागवत कथा का भूमि पूजन एवं खेल मैदान का लोकार्पण होगा और आसपास के सभी क्षेत्र वासियों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारने का कष्ट करें।

निवेदनः अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा

1 जनवरी को सुबह 10 बजे से प्रारंभ होगी रामकथा एवं भंडारा

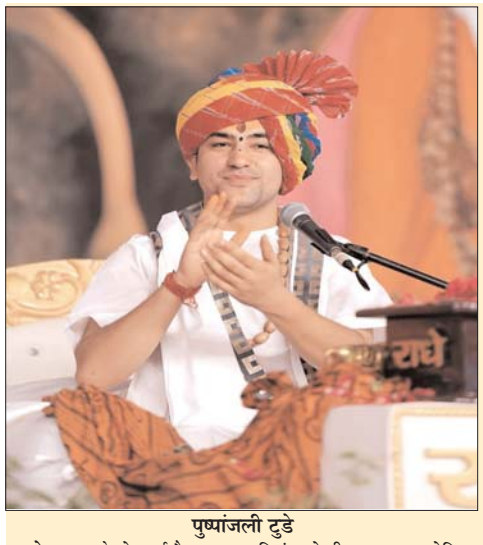

पुष्पांजली टुडे

दमोह। शहर के होमगार्ड मैदान पर 24 दिसंबर से श्री राम कथा आयोजित की जा रही है बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरज कृष्ण शास्त्री के मुखारविंद से श्री राम कथा की रस वर्षा हो रही है इस दौरान लाखों की तादाद में भक्तगण पहुंचकर पुण्यलाभ अर्जित कर रहे हैं। 1 जनवरी तक आयोजित होने वाली कथा के दौरान शुक्रवार को पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र

वृद्धाश्रम के वृद्ध जनों को श्री राम कथा में संतों के साथ किया विराजमान

कृष्ण शास्त्री ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की कथा सुनाई इस दौरान विशेष बात यह नजर आई कि वृद्धाश्रम में रहने वालो को विशेष स्थान दिया गया। पीठाधीश्वर ने कहा कि भक्ति के बिना मुक्ति असंभव है उन्होंने कहा कि संसार में ऐसा कौन नहीं है जो अपनी पूजा नहीं चाहता। उन्होंने श्री राम जी के विवाह का उल्लेख भी किया जिसमें चारों भाई दूल्हा बने हुए हैं माता जानकी सहित चारों दुल्हनो का किस तरह से विवाह शास्त्रोक्त रीति रिवाज से विधि विधान के साथ किया जा रहा है इसका उल्लेख किया उन्होंने शिव पार्वती का भी उल्लेख किया। पीठाधीश्वर ने बताया कि शिव पार्वती भक्ति के कारण स्वयं पूजे गए उनके दोनों बेटे कार्तिकेय एवं श्री गणेश के साथ दोनों बहू एवं दोनों नाती भी पूजे गए उन्होंने कहा यह सब धर्म का प्रताप होता है ऐसा अन्य देवता में देखने नहीं मिला। भक्ति के प्रभाव से पूरा खानदान पूजनीय हो गया यह सब भक्ति का ही प्रताप है। शास्त्री जी ने वृतांत सुनाते हुए कहा कि एक बार जब अयोध्या में राजा दशरथ जी ने ब्राह्मण को निमंत्रण करने के लिए कहा जिन्हें बताया गया था कि ऐसे ब्राम्हण को निमंत्रित किया जाए जिसने कभी किसी के घर भोजन नहीं किया हो। समूचे देशों में पता लगाया गया तो रावण ही एकमात्र ऐसा ब्राह्मण निकला जिसने कभी किसी के घर में भोजन नहीं किया था इसके बाद सुमंत जी को भेजकर रावण के लिए निमंत्रण दिया गया रावण जब भोजन करने पहुंचा तो माता सीता जी ने स्वयं पकाया हुआ भोजन रावण को खिलाया लेकिन इस दौरान एक तिनका सब्जी में गिर गया था माता सीता ने हाथ से उसे निकालना चाहा लेकिन वह अनुचित था इसलिए उन्होंने जब सब्जी में पड़े तिनके को नजर भर के देखा तो तिनका जलकर भस्म हो गया था। इसके बाद शास्त्री जी ने सुंदरकांड की चौपाई तिन धरी ओट कहत वैदेही, सुमर अवध पति परम स्नेही का विस्तार से उल्लेख किया उन्होंने बताया कि जब वह रावण की अशोक वाटिका में थी उस समय रावण उनके सामने आया तो उन्होनें तिनका उठाकर रावण को दिखाया और याद दिलाया कि जिस तरह से नजर भर देखने पर तिनका जलकर राख हो सकता है तो रावण तुम्हार क्या हाल होगा इतना सोच लेना यह सुनकर रावण पीछे हट जाता है फिर माता सीता को छूने तक का साहस नहीं करता।

वृद्ध आश्रम से श्री राम कथा में मंच पर पहुंचे वृद्धजन-श्री बाघेश्वर धाम पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी देर शाम वृद्ध आश्रम पहुंचे थे जहां पर उन्होंने वृद्धजनों की आरती तिलक के बाद माला पहनाकर तथा कंबल उड़ा कर उनका सम्मान किया था बाद में उनके पैर छुए और आशीर्वाद भी प्राप्त किया था दूसरे दिन शुक्रवार सुबह उन्होंने विधायक अजय टंडन को आदेशित किया कि सभी वृद्ध जनों को कथा पंडाल में लाकर उचित स्थान देते हुए उन्हें श्री राम कथा श्रवण कराई जाएं। इस दौरान विधायक अजय टंडन ने तत्परता के साथ सेवादारों को भेजकर वृद्ध आश्रम की सभी महिला पुरुष वृद्ध जनों को स्पेशल वाहन से श्री राम कथा पंडाल में बुलाया गया जहां पर संत महात्माओं के मंच पर वृद्ध जनों को विराजमान किया बाद में उन्हें पीठाधीश्वर के समीप सबसे आगे बैठाया गया जहां से सभी वृद्ध जनों ने श्री राम कथा श्रवण की।

सबसे आगे ष्ठ में बैठेंगे बुजुर्ग-शुक्रवार को कथा के दौरान श्री बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर ने कहा कि बुजुर्गों को सम्मान में कभी कोई कमी नहीं देना चाहिए। उन्होंने श्री राम कथा के दौरान कथा संयोजक एवं दमोह विधायक अजय टंडन से कहा कि कहा कि शनिवार को सभी बुजुर्ग जो कथा सुनने आते हैं उन्हें मंच के समीप सबसे आगे ष्ठ में स्थान दिया जाए तथा अंग्रेजी नववर्ष के पहले दिन 1 जनवरी को जो युवक युवतियां कथा सुनने आते हैं उन्हें ष्ठ में विशेष स्थान दिया जाए। बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर ने गुरू को लेकर कहां की गुरु एक ऐसा माध्यम है जो भगवान को मिलाने का काम करते हैं अतः गुरु का सम्मान हर व्यक्ति को करना चाहिए क्योंकि मुक्ति तभी मिलती है जब गुरु के माध्यम से हम भगवान को पा जाते हैं प्रवचन के दौरान शायराना अंदाज में गुरुवर ने कहा कि ना जीने की खुशी ना मौत का गम, जब तक है दम बागेश्वर के हैं हम। यह संकल्प लेकर जो शिष्य आगे बढ़ते हैं वह हमेशा उन्हें जीवन में कभी भी किसी तरह की कोई विपत्ति नहीं आती।।

1 जनवरी को सुबह 10 बजे से 1 बजे तक होगी श्री रामकथा एवं भंडारा-श्री बाघेश्वर धाम पीठाधीश्वर पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने कथा के दौरान बताया कि 1 जनवरी को अंग्रेजी का नववर्ष है और उस दिन उन्हें बागेश्वर धाम में भी भक्तों को आशीर्वाद देना है अतः कथा का समय परिवर्तित करते हुए 1 जनवरी को सुबह 10 से दोपहर 1 बजे तक श्री राम कथा आयोजित की जाएगी बाद में इसी दिन विशाल भंडारा कथा स्थल के समीप आयोजित होगा।

विकास के लिए जनसेवा भाव के साथ कार्य करूंगा कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी : विधायक संजीव सिंह

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की विकास यात्रा का भिंड में होगा जोरदार स्वागत

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। भारतीय जनता पार्टी के युवा नेता विधायक संजीव सिंह कुशवाह संजू ने पत्रकारों से रूबरू होते कहा कहा की झारखंड सरकार को जैन तीर्थ स्थल को पर्यटन स्थल बनाने का जो निर्णय लिया है इसे तत्काल सूचित कर देना चाहिए समाज में काफी आक्रोश व्यक्त है और उनकी जन भावनाओं देखते हुए समाज को न्याय मिले इसके लिए झारखंड सरकार से आग्रह है कि इस निर्णय को तत्काल वापस लें। उन्होने कहा कि भिंड विधानसभा क्षेत्र के विकास के लिए जन सेवा भाव के साथ कार्य करूंगा कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी भिंड को नगर पालिका से नगर निगम बनाने की योजना चल रही है और जिसका प्रस्ताव भी राज्य सरकार पर पहुंचा है उन्होंने कहा कि ग्रामीण एवं शहरी अंचल को विकास की मुख्यधरा से जोड़ने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वर्ष 2022 और 23 के द्वितीय अनुपूरक बजट में भिंड विधानसभा क्षेत्र के लिए करोड़ों रुपए के पहुंच मार्ग सुरक्षित किए विकास के लिए जन सेवा भाव ही मेरी पहली प्राथमिकता है उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद विचार और अंतोदय की विकास योजनाओं से गरीब मजदूर किसानों को आत्मनिर्भर विकास की दिशा में जोड़ने का कार्य कर रही है।

विधायक श्री कुशवाह ने संस्कृति गार्डन में आयोजित पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 1 फरवरी से 15 फरवरी तक विकास यात्रा आयोजित करने का निर्णय लिया है इस दौरान भिंड में भी यह यात्रा आएगी जहां करोड़ों रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा और वहीं इस भिंड की धरा पर उनका ऐतिहासिक स्वागत भी होगा। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि ग्रामीण अंचल की सड़कों के लिए प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क

परियोजना में भी शामिल करने के लिए हमारा प्रयास जारी है ताकि अच्छी से अच्छी सड़कें बन कर और गांव को विकास की ओर जोड़ा जा सके। प्रदेश सरकार ने पंचायतों को विशेष दर्जा देकर इस मनिया मध्य प्रदेश बनाने के लिए नगरीय निकाय जिला पंचायत जनपद और ग्राम पंचायत विकास की मुख्य दूरी है जिसमें हम सब मिलकर के आगे बढ़ाएंगे हमारा हर कदम विकास के लिए पहली प्राथमिकता है और मकसद शहर के विकास का ही है नगर निगम बनने से जो गांव सड़क के किनारे लगे हैं उन्हें हम सीमा में जोड़ेंगे ताकि विकास कार्यों को गति दी जा सके उन्होंने कहा कि भिंड विधानसभा के लिए वर्ष 2023 के द्वितीय अनुपूरक बजट विधानसभा के समक्ष प्रस्तुत किए गए जिसमें क्षेत्र के लिए वित्त मंत्रालय द्वारा भिंड बस स्टैंड से साला मंदिर पहुंच मार्ग, ऊमरी पाण्डरी मार्ग, बिलाव पहुंच मार्ग, ग्राम बिलाव के पुरा से आमना बिलाव रोड तक, हाईस्कूल ग्राम कठारा से मडनयी तक, नयागांव हार की जमीन से महांडा मधूपुरा मार्ग वाया धनुकपुरा, भजपुरा से लक्ष्मीपुरा, मधूपुरा से रोरा, दैवगड से किटी, सुखवासी से कल्याणपुरा, गहवद से कण्डलीपुरा, कल्याण सिंह का पुरा, रतनपुरा से एसएफए नेशनल हाईवे तक ऐसी कई रोड स्वीकृत की गई है और वहीं अकोडा नगर परिषद में डिग्री कॉलेज का निर्माण शीघ्र हो रहा है जिनकी लागत 4 करोड़ 34 लाख है, 49 क्लॉक है जिससे सड़कों का निर्माण किया जाएगा। ऊमरी पंचायत को नगर परिषद बनाने का प्रस्ताव भी राज्य सरकार तक पहुंच चुका है जोकि बहुत जल्द ही कैबिनेट की बैठक में उमरी को विशेष सौगात नगर परिषद की मिलेगी जो किनारे से छोटे गांव हैं उन्हें सीमा में शामिल किया जाएगा ताकि ऊमरी क्षेत्र के विकास को आगे गति मिले और हर गरीब मजदूर किसान आत्मनिर्भर बनै। विधायक श्री कुशवाह ने कांग्रेस द्वारा लाई गई सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि कांग्रेस ने 51 आरोप लगाए थे उनमें एक भी आरोप सरकार के विरुद्ध प्रमाणित नहीं कर सके जब विधानसभा सदन में अविश्वास पर चर्चा हो रही थी तो पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और नेता प्रतिपक्ष भी मौजूद नहीं थी कांग्रेस विधायक शक्ति परीक्षण करने में लगे रहे उनके ही विधायकों का अविश्वास में समर्थन नहीं मिला और वह गिर गया कांग्रेस के विधायकों का भी समर्थन नहीं मिला कांग्रेसी विधायक जीतू पटवारी ने विधानसभा सदन में गलत आंकड़ों के साथ भारतीय जनता पार्टी और सरकार पर आरोप लगाए उसमें उनकी एक किरकिरी हो गई। उनका झूठ जनता के सामने उजागर हो गया। पत्रकार वार्ता में भाजपा नगरीय निकाय प्रकोष्ठ के जिला संयोजक रामनरेश शर्मा,नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा बाल्मिकी,जनपद अध्यक्ष सरोज बघेल,भाजपा प्रवक्ता अजय शर्मा, नगरपालिका के पार्षदगण प्रेस कांफ्रेंस में मौजूद रहे।

प्रतिभा सम्मान समारोह कार्यक्रम में आने का दीया बाबाजी को निमंत्रण

पुष्पाजंली टुडे

सिघाना निज प्रतिनिध अभा सिर्वी महासभा के कुक्षी, गंधवानी , मनावर की युवा परगना निमाड़ संगठन द्वारा आगामी 10 जनवरी 2023 को भव्य प्रतिभावान विद्यार्थियों(छात्र छात्राओं) का सम्मान समारोह सोजत हनुमान की पावन धरा ग्राम बोरुद में संपन्न होगा इस कार्यक्रम को लेकर आज यहां अखिल भारतीय सिर्वी महासभा एवं युवा परगना निमाड़ महासभा के पदाधिकारी द्वारा क्षेत्र के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र बालीपुरधाम आश्रम में प्रथम निमंत्रण दिया निमंत्रण के पूर्व समाज के वरिष्ठ बाबूलाल बर्फा बोरुद द्वारा ब्रह्मलीन श्री श्री 1008 गजानंद जी महाराज बाबाजी के चरण पादुका के पूजन अर्चन कर श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद लेकर संत श्री योगेशजी महाराज को भी कार्यक्रम में आने का निमंत्रण देकर आशीर्वाद लिया इस पावन कार्यक्रम का निमंत्रण पाकर योगेश जी महाराज ने भी आने का निमंत्रण स्वीकार किया साथ ही सफल कार्यक्रम होने का आशीर्वाद देते हुए मंगल कामना की इस अवसर पर निमाड़ परगना जिलाध्यक्ष राधेश्याम मुकाती हरिदासजी स्मारक ट्रस्ट उपाध्यक्ष लक्ष्मण परिहार, ओकारेश्वर ट्रस्ट उपाध्यक्ष भानालाल सोलंकी, प्रदेश प्रतिनिधि मुकेश गहलोत डेहरी सिर्वी महासभा मनावर तहसील अध्यक्ष संदीप सेप्टा, युवा परगना जिलाध्यक्ष नरेंद्र देवड़ा, युवा परगना जिला महासचिव विशेष भायल, युवा संगठन अध्यक्ष मनावर हरीश लछेटा, तहसील महासचिव राजू देवड़ा बालीपुर, दिलीप हम्मड बालीपुर,धन्नालाल बर्फा दसवीं कार्यक्रम सहसंयोजक मोहन सिदडा, अजय (आईजी) राजेंद्र हम्मड, गोविंद गहलोत, भगवान लछेटा, पप्पू राठौर, सिर्वी समाज सकल पंच बोरुद आदि समाज बंधु एवं महासभा के पदाधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे उक्त जानकारी तहसील मीडिया प्रभारी विजय राठौर सिघाना द्वारा दी गई.

सम्पादकीय

ट्रिपल टेस्ट की बाधा

इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने उत्तर प्रदेश सरकार और राज्य चुनाव आयोग को निर्देश दिया है कि प्रदेश में स्थानीय निकाय चुनाव ओबीसी आरक्षण के बगैर ही कराए जाएं। कोर्ट ने इन चुनावों में ओबीसी आरक्षण के मद्देनजर राज्य सरकार की ओर से जारी रिजर्व क्षेत्रों की प्रॉविजनल लिस्ट यह कहते हुए रद्द कर दी कि इसके लिए सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुरूप ट्रिपल टेस्ट की शर्तें पूरी नहीं की गई हैं। सुप्रीम कोर्ट के बहुचर्चित ट्रिपल टेस्ट फॉर्मूले के मुताबिक आर्थिक, शैक्षणिक स्थितियों और नगरीय निकायों में ओबीसी पिछड़ेपन की प्रकृति और उसके प्रभावों का अध्ययन करके आंकड़े जुटाने के लिए एक आयोग का गठन होना चाहिए। इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर ही सरकार निकायों के लिए ओबीसी आरक्षण तय कर सकती है, लेकिन वह 50 फीसदी की अधिकतम सीमा से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाईकोर्ट ने साफ कर दिया है कि जब तक इस ट्रिपल टेस्ट की शर्तें हर लिहाज से पूरी नहीं की जातीं, तब तक राज्य में स्थानीय निकायों में ओबीसी को आरक्षण नहीं दिया जा सकता। लेकिन ट्रिपल टेस्ट की शर्तें पूरी करने में वक्त लगेगा, जबकि म्युनिसिपैलिटीज का कार्यकाल अगले महीने के आखिर तक समाप्त हो रहा है। यही वजह है कि हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा है कि ओबीसी आरक्षण के बगैर ही इन चुनावों की अधिसूचना तत्काल जारी कर दी जाए ताकि कार्यकाल समाप्त होने से पहले निकाय चुनाव संपन्न हो सकें। हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद जहां विपक्षी दलों की बांछें खिली हुई हैं, वहीं सत्तारूढ़ बीजेपी के सामने मुश्किल खड़ी हो गई है। समाजवादी पार्टी और बीएसपी जैसे दलों ने आरोप लगाया है कि प्रदेश सरकार ने जानबूझकर यह स्थिति पैदा होने दी। उनके मुताबिक राज्य सरकार ने कोर्ट में ढंग से अपना पक्ष नहीं रखा क्योंकि वह चाहती ही नहीं थी कि ओबीसी समुदायों को आरक्षण मिले। बीजेपी भी यह बात जानती है कि अगर बगैर ओबीसी आरक्षण के चुनाव करवाए गए तो उसे इस विशाल वोटर समुदाय की नाराजगी झेलनी पड़ेगी। इसीलिए सरकार कोई रास्ता निकालने की कोशिश में है। मुख्यमंत्री ने संकेत दिया है कि चुनाव से पहले ओबीसी आरक्षण का यह मसला सुलझा लिया जाएगा। कहा जा रहा है कि राज्य सरकार इस फैसले पर सुप्रीम कोर्ट से स्टे लेने की कोशिश कर सकती है। मगर क्या सुप्रीम कोर्ट अपने ही बताए ट्रिपल टेस्ट से छूट लेने की इजाजत राज्य सरकार को देगा। बहरहाल, इस मसले का क्या हल निकलता है यह समय बताएगा, लेकिन फिलहाल एक सबक तो सभी दलों के लिए है कि ओबीसी आरक्षण को समाज का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के एक साधन के ही रूप में इस्तेमाल किया जाए। चुनावी राजनीति के टूल की तरह उसका प्रयोग ना किया जाए।

तालिबान के राज में क्रूर और दकियानूसी नियम कानून लादने शुरू

काबुल में सत्ता में बदलाव को सत्रह महीने होने जा रहे हैं। तालिबान के दोबारा सत्ता कब्जाने के बाद से ही ये आशंकाएं जोर पकड़ने लगी थीं कि महिला अधिकारों को लेकर तालिबान का रुख कहीं पहले जैसा तो नहीं होगा। लेकिन ये आशंकाएं अब हकीकत में बदल चुकी हैं। गौरतलब है कि दो दशक पहले जब तालिबान ने अफगानिस्तान में सत्ता हथियाई थी, उसके बाद महिलाओं पर अत्याचारों की जो तस्वीरें दुनिया ने देखीं और जो दर्दनाक वाकये पड़ने-सुनने को मिले थे, वे रोंगटे खड़े कर देने वाले थे। चेहरा नहीं ढंकने जैसी मामूली बात को गंभीर अपराध बता कर सरेआम बेरहमी से महिलाओं को पीटा जाता था, उन पर कोड़े बरसाए जा रहे थे और दूसरे अपराधों में तो मौत के घाट तक उतार दिया जाता था। यही सब आज फिर से हो रहा है। चिंता की बात यह है कि इस्लाम की रक्षा के नाम पर तालिबान आज जो कर रहा है, उससे इस देश का सामाजिक ढांचा तो टूटेगा ही, देश को दूसरी गंभीर चुनौतियों का भी सामना करना पड़ेगा। तालिबान ने महिलाओं के काम पर जाने को लेकर जो पाबंदी लगाई है, उसके भयानक असर देखने को मिलेंगे। लेकिन लगता है तालिबान शासन को यह सब समझ नहीं आ रहा। अगर स्वयंसेवी संगठनों में महिलाएं काम नहीं करेंगी तो कैसे इस देश में महिलाओं और बच्चों को भूख से मरने से बचाया जा सकेगा। आज अफगानिस्तान की सबसे बड़ी समस्या भुखमरी, कुपोषण और स्वास्थ्य को लेकर है। करीब तीन करोड़ आबादी के पास खाने को नहीं है। इन्हें विदेशी संगठनों की मदद से खाना और दवाइयां मुहैया करवाई जा रही हैं। लेकिन अब मुश्किल यह आने वाली है कि महिला शिक्षा और काम के अधिकार के मुद्दे पर तालिबान को कसने के लिए विदेशी संगठन मदद देना बंद कर सकते हैं। पर तालिबान को इन सबकी चिंता नहीं है। उसका एकमात्र मकसद इस्लाम की रक्षा के नाम पर महिलाओं को कुचल देना है। तालिबान को इस बात का शुरू से डर रहा भी है कि महिलाएं अगर बराबरी से सत्ता में भागीदार बन गईं तो उनकी आतंक के कारोबार की दुकान बंद होते देर नहीं लगने वाली। इसलिए अफगान शांति वार्ता में भी महिलाओं के अधिकारों को लेकर पुरजोर तरीके से आवाज उठती रही थी। महिलाओं की ताकत के आगे ईरान की सत्ता को भी झुकना पड़ गया। और आज काबुल में भी शिक्षा के अधिकार को लेकर महिलाएं जिस तरह सड़कों पर उतरी हैं, तालिबान को उसका मतलब समझ जाना चाहिए।

दस दिन पहले एक फरमान जारी कर तालिबान ने लड़कियों और महिलाओं को कालेज और विश्वविद्यालयों में जाने से रोक दिया। उच्च शिक्षा मंत्रालय की ओर से जारी बयान में साफ कहा गया कि सारे कालेज और विश्वविद्यालय सरकार के इस आदेश को तत्काल प्रभाव से लागू करें। इससे पहले लड़कियों को स्कूल भेजने पर रोक लगा दी गई थी। तालिबान के ऐसे बेहूदे कदमों से साफ है कि वह देश को आदिम युग में ले जाने पर तुला है। अब तालिबान ने महिलाओं को स्वयंसेवी संगठनों और विदेशी सहायता संगठनों में काम करने से रोक दिया है। तालिबान का संदेश साफ है कि महिलाएं और लड़कियां घरों से बाहर कदम न रखें। वरना उनका वैसा ही हाल किया जाएगा जैसा वह अब तक अपने तथाकथित आदिम कानूनों के हिसाब से करता आया है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि अगर महिलाओं के प्रति तालिबान का यही रवैया रहा तो अफगानिस्तान का भविष्य कैसा होगा!

काबुल में सत्ता में बदलाव को सत्रह महीने होने जा रहे हैं। तालिबान के दोबारा सत्ता कब्जाने के बाद से ही ये आशंकाएं जोर पकड़ने लगी थीं कि महिला अधिकारों को लेकर तालिबान का रुख कहीं पहले जैसा तो नहीं होगा। लेकिन ये आशंकाएं अब हकीकत में बदल चुकी हैं। गौरतलब है कि दो दशक पहले जब तालिबान ने अफगानिस्तान में सत्ता हथियाई थी, उसके बाद महिलाओं पर अत्याचारों की जो तस्वीरें दुनिया ने देखीं और जो दर्दनाक वाकये पड़ने-सुनने को मिले थे, वे रोंगटे

खड़े कर देने वाले थे। चेहरा नहीं ढंकने जैसी मामूली बात को गंभीर अपराध बता कर सरेआम बेरहमी से महिलाओं को पीटा जाता था, उन पर कोड़े बरसाए जा रहे थे और दूसरे अपराधों में तो मौत के घाट तक उतार दिया जाता था। यही सब आज फिर से हो रहा है। चिंता की बात यह है कि इस्लाम की रक्षा के नाम पर तालिबान आज जो कर रहा है, उससे इस देश का सामाजिक ढांचा तो टूटेगा ही, देश को दूसरी गंभीर चुनौतियों का भी सामना करना पड़ेगा। तालिबान ने महिलाओं के काम पर जाने को लेकर जो पाबंदी लगाई है, उसके भयानक असर देखने को मिलेंगे। लेकिन लगता है तालिबान शासन को यह सब समझ नहीं आ रहा। अगर स्वयंसेवी संगठनों में महिलाएं काम नहीं करेंगी तो कैसे इस देश में महिलाओं और बच्चों को भूख से मरने से बचाया जा सकेगा। आज अफगानिस्तान की सबसे बड़ी समस्या भुखमरी, कुपोषण और स्वास्थ्य को लेकर है। करीब तीन करोड़ आबादी के पास खाने को नहीं है। इन्हें विदेशी संगठनों की मदद से खाना और दवाइयां मुहैया करवाई जा रही हैं। लेकिन अब मुश्किल यह आने वाली है कि महिला शिक्षा और काम के अधिकार के मुद्दे पर तालिबान को कसने के लिए विदेशी संगठन मदद देना बंद कर सकते हैं। पर तालिबान को इन सबकी चिंता नहीं है। उसका एकमात्र मकसद इस्लाम की रक्षा के नाम पर महिलाओं को कुचल देना है। तालिबान को इस बात का शुरू से डर रहा भी है कि महिलाएं अगर बराबरी से सत्ता में भागीदार बन गईं तो उनकी आतंक के कारोबार की दुकान बंद होते देर नहीं लगने वाली। इसलिए अफगान शांति वार्ता में भी महिलाओं के अधिकारों को लेकर पुरजोर तरीके से आवाज उठती रही थी। महिलाओं की ताकत के आगे ईरान की सत्ता को भी झुकना पड़ गया। और आज काबुल में भी शिक्षा के अधिकार को लेकर महिलाएं जिस तरह सड़कों पर उतरी हैं, तालिबान को उसका मतलब समझ जाना चाहिए।

भगदड़ की राजनीति

जो जितना प्रदर्शन कर लेता है, वह उतना ही ताकतवर नेता माना जाता है। इसलिए राजनेताओं और राजनीतिक दलों में प्राय- ऐसे प्रदर्शनों की होड़ नजर आती है। मगर इन प्रदर्शनों में आम लोगों को जो दुश्वारियां झेलनी और कई बार जान गंवा कर कीमत चुकानी पड़ती है, उसकी फिक्र शायद नहीं की जाती। इसी बेपरवाही का ताजा नतीजा है आंध्र प्रदेश में नेल्लोर का हादसा। तेलुगू देशम पार्टी के चंद्रबाबू नायडू ने सड़क पर प्रदर्शन निकाला था। उसी दौरान भगदड़ मची और उसमें दब कर सात लोगों की मौत हो गई। कई गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। बताया जा रहा है कि पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच हाथापाई शुरू हो गई, जिससे भगदड़ मची और यह हादसा हो गया। मृतकों के परिजनों को एनटीआर ट्रस्ट की तरफ से दस-दस लाख रुपए देने की घोषणा कर दी गई है। इससे उन परिवारों के आंसू कितने पोंछ पाएंगे, कह नहीं सकते। पर गंभीर सवाल यह है कि राजनीतिक दल अपनी शक्ति प्रदर्शन की होड़ से फुरसत निकाल कर कब इस बात पर विचार करेंगे कि उनकी रैलियों में शामिल लोग बलि का बकरा नहीं होते। उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी उनकी होती है। यह पहली घटना नहीं है, जब सड़क पर किसी राजनीतिक प्रदर्शन के दौरान भगदड़ मची या अचानक हिंसा भड़क उठी और लोग मारे गए। पश्चिम बंगाल के राजनीतिक इतिहास में ऐसी सैकड़ों घटनाएं दर्ज हैं। वहां तो हिंसा और राजनीति जैसे एक-दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता एक-दूसरे पर हिंसक हमले करते ही रहते हैं। केरल में भी खूनी संघर्ष की अनेक गाथाएं हैं। देश का शायद ही कोई ऐसा राज्य हो, जहां राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन में कार्यकर्ताओं, आम लोगों को कीमत न चुकानी पड़ी हो। रैलियों में भाड़े के कार्यकर्ता जुटाने की परंपरा अब पुरानी हो चुकी है। उसमें लोग लाए तो बड़े जोश के साथ हैं, पर उनकी सुरक्षा और खाने-पीने आदि की फिक्र कम ही की जाती है। ये भाड़े के लोग आमतौर पर सामान्य जन होते हैं। उनका संबंधित दल से कोई वैचारिक लगाव भी नहीं होता। रैलियों में जब किसी वजह से भगदड़ मचती या हिंसक हमले शुरू होते हैं, तो उन्हें अपने बचाव का तरीका सूझ नहीं पाता और अक्सर वही बलि का बकरा बनते हैं। इसलिए भी शायद चंद्रबाबू नायडू जैसे नेताओं को उनकी कोई फिक्र नहीं होती। विचित्र है कि चंद्रबाबू नायडू अपनी और अपनी पार्टी की अहमियत साबित करने सड़क पर प्रदर्शन करते निकले थे, मगर उनके कार्यकर्ताओं में ही अनुशासन नाम की चीज नजर नहीं आई। जब भी इस तरह भारी संख्या में भीड़ सड़कों पर निकलती है, तो किसी उपद्रव, हिंसा, भगदड़ आदि की आशंका रहती ही है। इसके मद्देनजर प्रशासन तो सतर्क रहता ही है, प्रदर्शन, रैली आदि आयोजित करने वाले संगठनों से भी अपेक्षा की जाती है कि उनके कार्यकर्ता अनुशासन का ध्यान रखें। राजनीतिक दलों को तो खासकर इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि उनका विपक्षी उनके आयोजन में विघ्न डालने के मकसद से कोई उपद्रव रच सकता है। मगर तेलुगू देशम के कार्यकर्ता जब खुद ही आपस में भिड़ गए, तो उनसे भीड़ की व्यवस्था सुचारु बनाने की उम्मीद भी भला कितनी की जा सकती है। रैलियों, सड़क प्रदर्शनों आदि में होने वाले ऐसे हादसों की आपराधिक जिम्मेदारी तय होनी चाहिए, तभी शायद इन पर कुछ विराम लगने की उम्मीद की जा सकती है।

सर्दी का सितमः मौसम का अपना चक्र, बढ़ी ठंड

इसलिए फिलहाल अगर समूचा उत्तर भारत क?ाके की ठंड से कांप रहा है तो यह कोई अस्वाभाविक घटना नहीं है। लेकिन ऐसे मौसम में जीवन अगर अस्त-व्यस्त होता है तो इसका मुख्य कारण उसका सामना करने के मामले में कहीं उचित सावधानी नहीं बरतना तो कहीं संसाधनों का अभाव होना होता है। गौरतलब है कि पिछले कुछ दिनों से दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के कई इलाकों समेत पश्चिमोत्तर भारत के व्यापक हिस्से में तापमान में गिरावट की वजह से ठंड काफी बढ़ गई है। ये इलाके शीतलहर की चपेट में हैं। खासतौर पर दिल्ली के कुछ इलाकों में इस बार तापमान चार और पांच डिग्री के आसपास तक चला गया, जबकि ऐसी आशंका कुछ पहाड़ी इलाकों में होने को लेकर जताई जाती रही है। ज्यादा मुश्किल इसलिए पेश आ रही है कि कई राज्यों में बेहद कम तापमान के बीच कोहरे की समस्या खड़ी हो गई है, जिससे सड़कों पर वाहनों से लेकर रेल गाड़ियों की रफ्तार भी बहुत धीमी हो गई है। समझा जा सकता है कि ऐसी स्थिति में रोजमर्रा की जिंदगी में लोगों को किस तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ रहा होगा। ऐसे में बचाव ही एकमात्र उपाय होता है, जिसे जहां सुविधा संपन्न लोग अपने स्तर पर सुनिश्चित करते हैं, तो बड़ा तबका ऐसा भी है जो ठंड की मार के बीच सरकार की ओर से किए जाने वाले बचाव के इंतजामों की उम्मीद करता है या फिर किसी तरह अपनी जिंदगी काटता है। ऐसे में दिल्ली और अन्य शहरों में रैन बसेरे सहित ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़ों और अन्य उपाय सुनिश्चित करना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। यह छिपा नहीं है कि देश की राजधानी होने के बावजूद दिल्ली के रैन बसेरे व्यवस्थागत कोताही या बदइंतजामों की वजह से कई बार केवल दिखावे का ठौर बन कर रह जाते हैं। जबकि जमा देने वाली ठंड से जूझते जरूरतमंद लोगों को थोड़ी राहत देने के लिए उचित इंतजाम करना सरकार की जवाबदेही भी है। अभी जाड़े के मौसम की मार एक तरह से बड़नी शुरू ही हुई है, जो अगले कुछ हफ्ते तक बनी रह सकती है। इसलिए दिल्ली सहित ठंड से बुरी तरह प्रभावित सभी राज्यों और इलाकों में कड़ाके की ठंड से बचने के लिए सरकारी स्तर पर भी उचित प्रबंध किए जाने चाहिए। इसके अलावा, पिछले करीब तीन सालों के दौरान कोरोना विषाणु से उपजी महामारी ने जो हालात पैदा किए थे, उसके मद्देनजर इस बार आशंका यह जताई जा रही है कि तापमान के इतना नीचे गिरने को लेकर सावधानी नहीं बरती गई तो आम लोगों की सेहत के सामने कई जोखिम पैदा हो सकते हैं। दरअसल, जाड़े के मौसम में रक्तचाप सहित कई तरह की दिक्कतें बढ़ जाने को स्वाभाविक माना जाता रहा है, लेकिन इस बार कोरोना विषाणु से संक्रमित होकर बाहर आ चुके होने के बावजूद ऐसे लोगों को ज्यादा सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है।

जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों पर विराम लगाने के लिए सरकार हर उपाय करने को तत्पर

वहां सुरक्षाबलों की चौकसी, सघन तलाशी और सरहद पर कड़ी नजर रखने का ही नतीजा है कि अब दहशतगर्दों का मनोबल काफी कमजोर हुआ है। मगर अब भी वे अपनी साजिशों को अंजाम देने की भरसक कोशिश करते देखे जा रहे हैं। कुछ-कुछ अंतराल पर कोई न कोई वारदात करके वे अपनी मौजूदगी का अहसास कराने की कोशिश करते हैं। उसी कड़ी में जम्मू से श्रीनगर की तरफ जा रहे चार आतंकियों को सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में मार गिराया। ये चारों एक ट्रक में छिप कर जा रहे थे। उनके पास से भारी मात्रा में हथियार और कारतूस बरामद हुए हैं। हथियारों की प्रकृति को देखते हुए कहा जा रहा है कि उनमें कोई कमांडर स्तर का आतंकी रहा हो सकता है। यह निस्संदेह सुरक्षाबलों की बड़ी कामयाबी है कि उन्होंने घाटी में किसी बड़ी साजिश को अंजाम से पहले ही रोक दिया। इसे महज संयोग नहीं माना जा सकता कि जिस दिन गृहमंत्री जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं की समीक्षा बैठक करने वाले थे, उसी दिन तड़के मुठभेड़ की यह घटना हुई। आतंकवादी ऐसे मौकों पर अपनी मौजूदगी जाहिर करने का मौका कभी नहीं चूकते। छिपी बात नहीं है कि कश्मीर में दहशतगर्दी को पोसने वाला पाकिस्तान है। भारत से लगी सीमा पर उसने आतंकी प्रशिक्षण शिविर खोल रखे हैं, जिसमें तैयार हुए आतंकियों को वह मौका देख कर भारतीय सीमा में प्रवेश कराने की कोशिश करता है। इसके अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं, जो विश्व

मंचों पर भी साझा किए जा चुके हैं। ताजा मुठभेड़ में मारे गए दहशतगर्द भी पाकिस्तान से भारत में घुसे थे। सड़क मार्ग के जरिए पाकिस्तान से तिजारत बंद है, इसलिए मालवाहकों में छिपा कर उधर से हथियार और दूसरे साजो-सामान भेजना मुश्किल हो गया है।

इसके लिए अब सीमा से सटे क्षेत्रों में ड्रोन का सहारा लिया जाने लगा है। मगर पाकिस्तान की तरफ से की गई ऐसी अनेक कोशिशें नाकाम की जा चुकी हैं। फिर लगातार अत्याधुनिक संचार सुविधाओं से निगरानी रखी जाने की वजह से सीमा पार कर भारत में घुसना कठिन होता गया है। ऐसे में आतंकी कुछ ऐसे रास्ते चुनने लगे हैं, जिधर से चकमा देकर भारतीय सीमा में घुसा जा सकता है। चिंता की बात है कि तमाम उपायों और चौकसी के बावजूद उनके मंसूबों पर पानी फेरना मुश्किल बना हुआ है। घाटी में दहशतगर्दी की जड़ें खत्म नहीं हो पा रहीं। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की समीक्षा बैठक में एक बार फिर दहशतगर्दी को जड़ से उखाड़ फेंकने की वचनबद्धता दोहराई गई। मगर पिछले कुछ महीनों में लक्षित हिंसा और सुरक्षाबलों के काफिले को निशाना बना कर किए गए हमलों को देखते हुए दावा करना मुश्किल है कि कब तक इस समस्या पर काबू पाया जा सकेगा। दरअसल, पाकिस्तानी शह के अलावा चिंता की बात यह भी है कि खुद घाटी में आतंकवादी गतिविधियों को लेकर नकार की भावना नहीं पैदा हुई है। अब भी युवाओं को दहशतगर्दों के साथ जुड़ाव से रोकना कठिन बना हुआ है। इन गुमराह नौजवानों को किस तरह मुख्यधारा से जोड़ा जाए, इस दिशा में गंभीरता से विचार की जरूरत है। जब तक घाटी के लोगों का मन नहीं बदलेगा, दहशतगर्दों के मंसूबे जिंदा रहेंगे। आतंकवाद के साथ लड़ाई अक्सर नागरिकों के खिलाफ चली जाती है। इस संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए कोई व्यावहारिक रणनीति बनाने की जरूरत है।

कार्यकर्ता संगठित होकर मिशन 2023 की चुनाव की तैयारी को लेकर बूथ को मजबूत करें : हरिशंकर खटीक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की माताजी हीरा बहन के निधन पर भाजपा ने श्रद्धांजलि अर्पित की

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश महामंत्री विधायक चंबल संभाग के संगठन प्रभारी हरीशंकर खटीक ने कहा भाजपा कार्यकर्ता आधारित दल है मिशन 2023 का विधानसभा चुनाव हम सबके लिए चुनौती है जिसे हम स्वीकार करते अपने-अपने बूथ केंद्रों पर संगठनात्मक ताकत के साथ मजबूत करें ताकि हर बूथ हम जीते और प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाने में लक्ष्य को हम प्राप्त करें जिसके लिए नीचे स्तर तक जिला एवं मंडल इकाइयों के पदाधिकारी प्रत्येक मंडलों में प्रवास कर संगठन को गति प्रदान करें यह उद्गार उन्होंने सिटी पैलेस में भाजपा जिला पदाधिकारियों, महामंत्री एवं मोर्चा के अध्यक्ष महामंत्रियों की महत्वपूर्ण बैठक को संबोधित करते हुए व्यक्त किए जिसकी अध्यक्षता जिला अध्यक्ष देवेंद्र सिंह नरवरिया ने की। उन्होंने कहा कि 10 जनवरी तक जिले के सभी मंडलों के 1480 मतदान केंद्रों पर कार्यकर्ता अपने बीएलओ से संपर्क कर 18 वर्ष के आयु के मतदाताओं के नाम वोटर सूची में जुड़वाने के लिए कार्य करें इसके लिए बूथ अध्यक्ष महामंत्री एवं बीएलओ से संपर्क कर इस कार्य को गति प्रदान करें। हम सब कार्यकर्ता जिम्मेदारी के साथ एकजुट होकर अपने बूथ को मजबूती देते हुए संगठनात्मक ताकत को गति प्रदान करें। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य जिला संगठन प्रभारी जय प्रकाश राजौरिया ने कहा की संगठनात्मक कार्यक्रमों को गति प्रदान करने के लिए अपने-अपने बूथ के अंदर पर बैठक आयोजित कर भाजपा की सुनामी को तूफान में बदलने का कार्य

करते हुए लक्ष्य को प्राप्त करें। बैठक की अध्यक्षता कर रहे जिला अध्यक्ष देवेंद्र सिंह नरवरिया ने कहा कि भाजपा भिंड जिले के सभी 26 मंडलों के मतदान केंद्रों तक शक्ति केंद्र एवं ग्रामीण अंचल के हर बूथ तक मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सब कार्यकर्ताओं की है जिसमें जब संगठन हमारा मजबूत होगा तो चुनाव ही हम जी सकेंगे मुख्य आधार हमारा मतदान केंद्र है हमें अपने केंद्र को मजबूती देते हुए पार्टी के संगठनात्मक इन निर्देशों का पालन कर हम आगे बढ़ेंगे। चंबल संभाग प्रभारी हरीशंकर खटीक ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से सर्किट हाउस पर मुलाकात करते हुए संगठनात्मक चर्चा की और वही कोर कमेठी की बैठक में भी उन्होंने संगठन की गति एवं चुनावी प्रबंधन तथा अन्य संगठनात्मक गतिविधियों को संचालित करने हेतु पार्टी के वरिष्ठ जनों का ध्यान आकर्षित कराया वहीं उन्होंने कहा कि हम सब कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करने के लिए मंडल स्तर पर प्रवास करें ताकि मोर्चा की ताकत को भी गति मिले। बैठक के अंत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की माताजी श्रीमती हीराबेन के निधन पर भाजपा नेताओं ने उनके छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की और 2 मिनट का मौन धारण कर शोकाकुल परिवार को ढांढस बनाया। इससे पूर्व भारत माता,भारतीय जनसंघ के प्रेरणा स्रोत पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के चित्र पर दीप प्रज्वलित एवं माल्यार्पण कर बैठक का शुभारंभ किया जिसका संचालन जिला महामंत्री धर्म सिंह भार्गव,आभार व्यक्त जिला कार्यालय प्रभारी एडवोकेट आरबी सिंह बघेल द्वारा किया गया बैठक में अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री लाल सिंह आर्य,प्रदेश मंत्री केशव सिंह भदौरिया,कार्यसमिति सदस्यों में अवधेश सिंह कुशवाह एडवोकेट, कृष्णकांता तोमर,पूर्व विधायक मुन्ना सिंह भदौरिया,जिला महामंत्री धीर भदौरिया,कमल शर्मा मंचासीन थे।

बिजली आउटसोर्स कर्मचारी संगठन द्वारा उप महाप्रबंधक को जिलाधीश के नाम सौंपा ज्ञापन

मांगे नही मानी तो जेल भरो आंदोलन के लिए तैयार

गोहद। मध्य प्रदेश अधिकारी कर्मचारी कल्याण संघ, विधुत मंडल तकनीकी कर्मचारी संघ, मध्य प्रदेश बिजली ऑउट सोर्स कर्मचारी संगठन, मध्य प्रदेश बाह्य स्त्रोत विदयुत कर्मचारी संगठन, विधुत ऑउट सोर्स कर्मचारी संगठन, ऑउट सोर्स परिषद भोपाल संगठन द्वारा संयुक्त रूप से समय समय पर संविदा कर्मचारियों के नियमतिकरण और बिजली ऑउट सोर्स कर्मचारियों के विभागीय संविलयन के लिए विगत वर्ष में अनेकों पत्र व्यवहार ज्ञापन और प्रदर्शन किए गए हैं, किंतु अभी तक मध्य प्रदेश सरकार की ओर से संविदा और आउटसोर्स दोनो वर्गों की मांगो पर ध्यान नहीं दिया गया है जिसके कारण कर्मचारी संगठन के 18 दिसंबर 2022 को आयोजित प्रांतीय अधिवेशन में सर्व सहमति से 6 जनवरी 2023 को जेल भरो आन्दोलन और 7 जनवरी 2023 से प्रदेश की राजधानी भोपाल में एकत्र हो कर सामुहिक कार्य बहिष्कार किया जा रहा है। 5-6 जनवरी दरमियानी रात्रि 12 बजे बाद समस्त संविदा और आउटसोर्स कर्मचारी कार्य बहिष्कार पर रहेंगे। कर्मचारी संघठनो ने चेतावनी दी है जिले के समस्त 33/11 केव्ही उपकेन्द्रो पर वैकल्पिक व्यवस्था करे नही तो होने वाली असुविधा के लिए शासन जिम्मेदार होगा।

अम्बाह रामलीला में लक्ष्ड़मण को लगी शक्ति, हनुमान लाए संजीवनी बूटी...

अम्बाह। श्रीराम बाटिका में चल रही रामलीला समारोह में पॉचवे दिन लक्ष्ड़मण शक्ति लीला का मंचन किया गया। रामलीला देखने के लिए बड़ी संख्या में महिला-पुरूष शामिल हुए। यह आयोजन महात्मा लोचन दास कला मण्डल द्वारा रामलीला समारोह समिति द्वारा किया जा रहा है। रामलीला में कलाकारों ने लीला का प्रदर्शन करते हुये रामलीला के संयोजक श्रीकृष्ण शर्मा नेताजी अन्तर्राष्ट्रीय ब्राम्हण समाज अध्यक्ष ने बताया कि, भवगवान श्रीराम वानर सेना को लेकर लंका में प्रवेश करते हैं। जब इसकी जानकारी रावण को लगती है, तो वह युद्ध के लिए घोषणा कर देता है। मगर प्रभु ने रावण को एक और मौका देते हैं और अंगद को रावण के दरबार में दूत बनाकर भेजते हैं। कहते हैं कि आप माता जानकी को प्रभु श्रीराम को लौटा दो और अपना सिर प्रभु के चरणों में झुका कर माफी मांग लो। इतना सुनते ही रावण क्रोधित हो गया सेनापति मेघनाथ और लक्ष्ड़मण में घनघोर युद्ध होता है। अंत में मायावी मेघनाथ के शक्ति बाण से लक्ष्ड़मण मूर्छित हो जाते हैं। रामलीला में लक्ष्ड़मण पर शक्ति का प्रयोग होने से राम दल में हाहाकार मच गया। सुखेन वैद्य को हनुमानजी रामा दल में लेकर आए और सुखेन वैद्य के बताए अनुसार सूर्योदय से पूर्व संजीवनी लाने की बात कही। हनुमानजी संजीवनी लेकर राम दल में पहुंचे। संजीवनी से लक्ष्ड़मण की मूर्छा खुलने से रामा दल में खुशी की लहर छा गई। उधर,1 अक्टूबर से आरंभ हुई रामलीला में कलाकारों द्वारा राम वनवास, भरत मिलाप, सीताहरण का शानदार मंचन किया कल के दिन हरिचश्चन्द्र लीला दिखाई जायेगी परसो रावण वध, राम राज्याभिषेक के साथ रामलीला का समापन किया जाएगा रामलीला समारोह समिति ने सभी धर्मप्रेमी जनता से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने की अपील की है।

फोन उठाए 112 मिलाएं

गांव हो या हाट, आपदा में यूपी 112 है आपके साथ

जनपदीय पुलिस द्वारा यूपी 112 की सेवाओं के प्रति आमजन को किया गया जागरूक

ब्यूरो सोनू कुमार माथुर

एटा। यूपी 112 की सेवाओं के प्रति आम लोगो में जागरूकता फैलाना के उद्देश्य से बस स्टैंड चौकी, एवं सुनहरी नगर चौकी के पास जनपदीय पुलिस द्वारा यूपी 112 की स्टाल, होर्डिंग लगा, पैंपलेट बांट एवं लोगो से

व्यक्तिगत संवाद स्थापित कर आम लोगो को यूपी 112 की सेवाओं के प्रति जागरूक किया गया। संवाद के क्रम में लोगो को बताया गया कि किसी भी आपदा की स्थिति में बेहिचक अपने फोन से 112 नंबर मिलाएं, कम से कम समय में उन तक सहायता पहुंचाई जाएगी।

बाल हिंसा और बाल अपराधों को समाप्त करने हेतु सामूहिक प्रयास जरूरी: जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कामना सिंह

बाल हिंसा और बाल अपराधों की रोकथाम हेतु जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। बाल हिंसा के विरूद्ध कार्यरत स्वयं सेवीय संस्थाओं के समूह जोइनिंग फोर्सेस फॉर चिल्ड्रन इंडिया द्वारा जिला प्रशासन के तत्वाधान में जिला स्तरीय शासकीय एवं गैर शासकीय संस्थाओं के साथ एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कलेक्टर कार्यालय भिण्ड के सभागार में किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कामना सिंह भदौरिया द्वारा की गई। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कामना सिंह भदौरिया ने कहा कि हम सबके संयुक्त प्रयासों से ही बाल हिंसा के बारे में विभिन्न माध्यमों से लोगों को जागरुक कर और समितियों को सशक्त बनाकर बाल हिंसा और बाल अपराधों पर लगाम लगा सकते हैं लेकिन इस हेतु हमें संवेदनशील रवैया अपनाना होगा। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास अब्दुल गफ्फार ने बताया कि बाल हिंसा को रोकने में बाल संरक्षण समितियों की अहम भूमिका होगी बाल संरक्षण समितियों को विभिन्न स्तरों पर सशक्त बनाकर ही बाल हिंसा को समाप्त किया जा सकता है इस हेतु हम विभिन्न स्तरों पर समितियों को प्रशिक्षित करने जा रहे हैं। कार्यशाला के दौरान सेव द चिल्ड्रन के राज्य प्रमुख श्री प्रदीप नायर द्वारा जॉइनिंग फोर्सेस के गठन और उद्देश्य बताते हुये कहा कि किस प्रकार एक बच्चा जीवन के विभिन्न चरणों में हिंसा से प्रताड़ित होता है और कैसे आपसी सामजस्य से इन्हें रोका जा सकता है। सहायक प्रबन्धक सेव द चिल्ड्रन दीपेंद्र सिंह तोमर द्वारा वीडियो एवं पीपीटी के माध्यम से हिंसा के विभिन्न पहलू, कारकों और रोकने के उपायों पर विस्तार से चर्चा की। कार्यशाला का समापन मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ यूपीएस कुशवाह द्वारा सभी का आभार व्यक्त करते हुये किया गया। कार्यशाला के दौरान जिला पंचायत सीईओ जेके जैन, जिला विधिक सहायता अधिकारी सौरभ कुमार दुबे,बाल कल्याण समिति अध्यक्ष श्रीमती विमला सिंह,जिला टीकाकरण अधिकारी, वीके व्यास, सेव द चिल्ड्रन से प्रगति मिश्रा, मनोज बिजौलिया, देव राजपूत, रेखा भदौरिया सहित शिक्षा विभाग, चिकित्सा विभाग,पुलिस विभाग चाइल्ड लाइन एवं विभिन्न गैर शासकीय संथाओं के 46 लोगों ने भाग लिया।

कैलारस-संविदा स्वास्थ्य कर्मियों ने अपनी मांगों को लेकर एसडीएम को सोपा ज्ञापन

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

कैलारस- संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ मध्यप्रदेश के आव्हान पर पूरे प्रदेश के एनएचएम के अंतर्गत कार्य करने वाले कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर गए है, इसी के तारतम्य ब्लॉक कैलारस में कार्यरत 50 संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी हॉस्पिटल परिसर में अपनी मांगों को लेकर हड़ताल पर बैठे संविदा स्वास्थ्य कर्मियों ने स्वास्थ्य केंद्र कैलारस का निरीक्षण करने आई एसडीएम मेघा तिवारी को अपनी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंप बही वही अनुविभागीय अधिकारी मेघा तिवारी ने कहा कि आपके इस मांग पत्र को वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुंचाया जाएगा संविदा स्वास्थ्य कर्मियों ने बताया कि हम रात दिन जीजान लगाकर स्वास्थ्य सेवाएं दे रहे हैं अभी हाल ही में कुछ दिन पहले कोरोना काल में लगातार हमने अपने घर परिवार को छोड़कर स्वास्थ्य सेवाएं दी लेकिन फिर भी हमारा नियमितीकरण नही

हो सका जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होगी हम इसी तरीके से हड़ताल पर बैठे रहेंगे वही संविदा स्वास्थ्य कर्मी ने बताया कि 5 जून 2018 को संविदा कर्मचारियों को नियमित करने के लिए सरकार ने एक पॉलिसी तैयार की जिसमे सभी को नियमितीकरण और नियमितीकरण की प्रक्रिया के समय में नियमित कर्मचारियों को मिलने वाले वेतन का 90व वेतन हम सभी संविदा कर्मचारियों को दिया जाएगा , परन्तु 4 वर्ष बीत जाने के बाद भी हमको इस पॉलिसी का लाभ नहीं मिल पा रहा है,माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने जब उनकी सरकार नहीं थी तब बोला था कि संविदा की व्यवस्था अन्याय पूर्ण है और हमारी सरकार आते ही हम सभी संविदा कर्मचारियों को नियमित करेंगे,परन्तु आज तक हमको ना ही नियमित किया गया है और ना ही हमको नियमित कर्मचारियों की सेलरी का 90व का लाभ मिला है।

कैलारस- एसडीएम ने किया स्वास्थ्य केंद्र कैलारस का निरीक्षण

कैलारस- एसडीएम मेघा तिवारी ने किया ने किया स्वाथ्य केन्द्र कैलारस का निरीक्षण

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

बीएमओ डॉ एस आर मिश्रा ने जानकारी देते हुए बताया कि अनुभागीय अधिकारी मेघा तिवारी ने सुबह स्वाथ्य केंद कैलारस में लेव, डॉक्टर रूम, मेटरनिटी वार्ड, जनरल ओपीडी, कोवीड रूम, एन आर सी बार्ड को चेक किया एव बही कोवीड रूम मौजूद सभी व्यवस्थाओ को बरीकी से चेक किया बही उन्होंने साफ सफाई पर विशेष व्यवस्था पर ध्यान देने के निर्देश दिए वही निरीक्षण करते हुए वहां पर एनआरसी में उपस्थित बच्चों की जानकारी ली एवं उनके पोषण आहार की जानकारी ली एव बच्चो के परिजनों एव एनआरसी प्रभारी मीनू शर्मा से पूछताछ की वही उन्होंने बीएमओ ऐसा मिश्र कुछ निर्देश भी दिए बही उन्होंने सभी डॉक्टर रूम चेक किया तो उनको अभी डॉक्टर मौके पर उपस्थित मिले वहीं उन्होंने बताया साफ सफाई का स्वास्थ्य केंद्र में साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें कि मेरे दुबारा निरीक्षण किया जाएगा एवं स्वास्थ्य केंद्र में आने वाले मरीजों को कोई समस्या ना हो।

मालनपुर नगर में रोड़ से हटाया गया अतिक्रमण एवं दुकानदारों के चालान काटे

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता मालनपुर
पहलवान सिंह राजावत

मालनपुर। नगर परिषद क्षेत्र में नेशनल हाईवे के किनारे मेन रोड पर चार पहिया वाहन ठेला एवं दुकानदारों को सामान रोड पर रख कर अतिक्रमण हो रहा था उसे हटवाया ब नगर परिषद द्वारा चालान काटे गए एवं रोड से बेदखल किया गया नगर परिषद सी एम ओ मनोज कुमार शर्मा ने अपनी इस कार्यवाही में पुलिस का सहयोग लिया जिसमें गोहद एस डी ओ पी सौरभ कुमार ने खुद मोर्चा संभाला एवं थाना प्रभारी विनोद बिनायक करकरे अपने समूचे पुलिस स्टाफ के साथ मिलकर नगर परिषद नेशनल हाईवे 719 से किनारे दुकानदारों द्वारा अतिक्रमण पर चालानी कार्रवाई की गई एवं अतिक्रमण हटाया गया साथ में नगर पालिका के द्वारा नगर पालिका टीम अधिकारियों कर्मचारियों के साथ ट्रैक्टर ट्रॉली लेकर चल रहे थे जिन्होंने बाहर रखे रखे हुए सामान को जप्त किया एवं उन पर तत्कालीन चालानी कार्रवाई पर्ची काटकर की गई जिसमें 7 चालान काटे गए एवं दुकानदारों को समझाइश दी गई कि आगे अगर कोई दुकानदार अतिक्रमण करते पाया

गया तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए।

इनका कहना है

मालनपुर नगर परिषद में रोड पर अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों पर चालानी कार्रवाई नगर पालिका द्वारा की जा रही है पुलिस इसमें सहयोगी बनी हुई है एवं यह कार्रवाई निरंतर चलती रहेगी।

एसडीओपी सौरभ कुमार

भूपेंद्र चौधरी ने पीएम मोदी की मां के निधन पर जताया शोक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां हीराबेन का शुक्रवार की सुबह निधन हो गया. पीएम मोदी की मां का निधन 100 साल की उम्र में अहमदाबाद के यूएन मेहता अस्पताल में हुआ. मां के निधन की जानकारी प्रधानमंत्री ने खुद ट्विटर के जरिए दी. उनके निधन पर यूपी बीजेपी के अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने शोक जताया है. भूपेंद्र चौधरी ने अपने शोक संदेश में लिखा, ÷प्रधान सेवक नरेंद्र मोदी की जीवनदात्री माता जी के निधन की सूचना अत्यंत दुःखद एवं हृदय विदारक है. ईश्वर पूजनीय माताजी की आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें एवं स्वजनों को संबल प्रदान करें. दुःख की इस अपार घड़ी में मेरी संवेदनाएं प्रधानमंत्री जी के साथ हैं.

मुख्यमंत्री ने भी जताया दुखः वहीं सीएम योगी ने ट्वीट कर लिखा, एक पुत्र के लिए मां पूरी दुनिया होती है. मां का निधन पुत्र के लिए असहनीय और अपूरणीय क्षति होती है. आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की पूज्य माता जी का निधन अत्यंत दुःखद है. प्रभु श्री राम दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें. इसके अलावा उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने ट्वीट कर लिखा, माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की माताश्री हीरा बा के निधन का अत्यंत दुःखद समाचार प्राप्त हुआ. बाबा केदार से प्रधानमंत्री व समस्त परिवारजनों को यह असीम कष्ट सहन करने की शक्ति व दिव्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने की कामना करता हूं.

पीएम मोदी की मां के निधन पर ओम प्रकाश राजभर बोले- मां के बराबर दुनिया में कोई नहीं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां हीराबेन का शुक्रवार की सुबह निधन हो गया. पीएम मोदी की मां का निधन 100 साल की उम्र में अहमदाबाद के यूएन मेहता अस्पताल में हुआ. मां के निधन की जानकारी प्रधानमंत्री ने खुद ट्विटर के जरिए दी. उनके निधन पर सुभासपा प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने दुख जताया है. ओम प्रकाश राजभर ने ट्वीट कर लिखा, माँ के बराबर इस दुनिया में कोई नहीं. आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की माताजी श्रीमती हीराबेन मोदी के निधन का दुखद समाचार प्राप्त हुआ. ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें. वहीं मायावती ने ट्वीट कर दुख जताते हुए लिखा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की माता श्रीमती हीराबेन के निधन हो जाने की खबर अति-दुःखद. उनके पूरे परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदना. कुदरत उन्हें एवं उनके सभी चाहने वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे.

पीएम मोदी की मां के निधन पर मायावती ने जताया गहरा दुख

पीएम मोदी की मां हीराबेन का शुक्रवार की सुबह निधन हो गया. पीएम मोदी की मां का निधन 100 साल की उम्र में अहमदाबाद के यूएन मेहता अस्पताल में हुआ. मां के निधन की जानकारी प्रधानमंत्री ने खुद ट्विटर के जरिए दी. उनके निधन पर बीएसपी प्रमुख मायावती ने ट्वीट कर दुख जताया. मायावती ने ट्वीट कर दुख जताते हुए लिखा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की माता श्रीमती हीराबेन के निधन हो जाने की खबर अति-दुःखद. उनके पूरे परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदना. कुदरत उन्हें एवं उनके सभी चाहने वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे. वहीं डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ट्विटर के जरिए दुख जताते हुए लिखा, ÷प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी की पूज्य माता श्रीमती हीराबेन जी का निधन अत्यंत दुःखद है. प्रभु श्रीराम जी से प्रार्थना करता हूँ कि पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें, शोक की इस घड़ी में प्रधानमंत्री, परिजनों, शुभचिंतकों व समर्थकों को संबल प्रदान करें.

सीएम योगी ने जताया दुख- वहीं सीएम योगी ने ट्वीट कर दुख जताते हुए लिखा, ÷एक पुत्र के लिए मां पूरी दुनिया होती है. मां का निधन पुत्र के लिए असहनीय और अपूरणीय क्षति होती है. आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की पूज्य माता जी का निधन अत्यंत दुःखद है. प्रभु श्री राम दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें. इसके अलावा डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने लिखा, देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पूज्य माताजी के अत्यंत दुःखद निधन से स्तब्ध व दुखी हूं. प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि गोलोकवासी पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें.

विधायक अमितेश शुक्ल की अनुशंसा पर 10 लाख रूपए की प्रशासकीय स्वीकृति

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद। राजिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक अमितेश शुक्ल के अनुशंसा पर जनपद पंचायत फिंगेश्वर में एक निर्माण कार्य हेतु 10 लाख रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति कलेक्टर श्री प्रभात मलिक द्वारा प्रदान किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जनपद पंचायत फिंगेश्वर अंतर्गत ग्राम पंचायत परसदाकला के ग्राम खुडसा में संतोषपुरी धाम सिलयारी बाहरा में टीन शेड निर्माण हेतु 10 लाख रुपये स्वीकृत किया गया है। क्रियान्वयन एजेंसी का दायित्व मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत फिंगेश्वर को दिया गया है।

जिले में कोरोना ने दी दस्तक, स्वास्थ विभाग अलर्ट, कब कहां कैसे और कौन, पढ़िए पूरी ख़बर

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद। जिले में कोरोना में फिर एक बार दस्तक दे दी है बीते कई महीनों से कोरोंना के एक भी मरीज़ नहीं मिलने के बाद अब ज़िले में फिर से कोरोंना ने अपनी उस्थिति दर्ज कराई है , गरियाबंद ज़िले के मैनपुर तहसील में एक व्यक्ति कोरोना संक्रमित पाया गया हैं। नए संक्रमितों को लेकर स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड पर आ गया है। फिलहाल युवक की कोई ट्रैवलिंग हिस्ट्री नहीं मिली है, डॉ की टीम ने बतलाया कोरोना पाज़ीटीव युवक होम आइसोलेट है वही ब्लड टेस्टिंग के लिए सैंपल महासमुंद भेजा जाएगा ।

राज्य कैंप योजना अंतर्गत जंगल मितान प्रशिक्षण सह जागरुकता शिविर के द्वितीय दिवस ग्राम नागिनबाहरा में जागृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया

संवाददाता हेमचंद नागेश

छुरा। वन परिक्षेत्र छुरा रेंजर सुयशधर दीवान के मार्गदर्शन में किया गया अतिथि के रुप में कलीराम नेताम उपसरपंच सरपंच,प्रतिनिधि चेतन ठाकुर,नीलकंठ ठाकुर शामिल हुए सर्वप्रथम चरौदा हाई स्कूल से 15 छात्र-छात्राएं चरौदा माध्यमिक शाला के 15 छात्र-छात्राएं नागिनबाहरा12 हाई स्कूल माध्यमिक शाला प्राथमिक शाला के विद्यार्थी के साथ वन गमन रेंजर सुयशधर दीवान डिप्टी रेंजर धनेश कुमार सिंहा शिक्षक गण उमेश कुमार यादव तेजराम साहू बीएस ठाकुर विभाग के कर्मचारी देवराज साहू पुष्पा गंधर्वो,ईशु जोशी आदि के साथ वन भ्रमण के लिए गए जहां रेंजर दीवान एवं डिप्टी रेंजर द्वारा विद्यार्थियों से परिचित कराया गया जिनमें सेमल,तेंदू,चार भेलवा, कुसुम,पलाश,तिनसा,साजा,के विषय में बताया जंगल के बीच में दीमक के भोडू,डबरा,झरिया पानी,मिट्टी के महत्व को बताया औषधि प्रजातियां जिनमें शतावर, सफेद मसली,अपराजिता,जंगली हल्दी गिलोय,जीव,जंतुओं तितली,गिलोरी,नीलकंठ तोता,देसी बगुला इत्यादि विषयों के बारे में बताया ग्रामीणों द्वारा भी स्थानीय पेड़ पौधे एवं जीव जंतु के नाम बताएं जंगल में बैठकर एक साथ विचारों का आदान प्रदान किए पश्चात विभाग द्वारा भवन भोज की व्यवस्था की गई थी स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाएं भोजन उपरांत सभा का आयोजन किया गया सभी को वनरक्षा वन्य प्राणियों की संरक्षण वृक्षारोपण के लिए रेंजर दीवान ने शपथ दिलाया वन मितान जागृति कार्यक्रम के उद्देश्य के विषय में जानकारी दी कार्यक्रम को कलीराम नेताम उपसरपंच ने कहा जीवन में जीते लकड़ी मरते लकड़ी के बारे में बताया लालच के कारण वनो को काट रहा है इसे हमें बचाना चाहिए शिक्षक उमेश साहू ने बताया जीवन में एक मितान होता है पर हमें वनों से मितान बनाना होगा क्योंकि हमें शुद्ध ऑक्सीजन देता है और वनों से हमें अनेक प्रकार की आरतियां प्राप्त होती है जंगल है तो हम हैं पर्यावरण जीवनदायिनी है डिप्टी रेंजर सिन्हा द्वारा बच्चों को गीत सुनाया प्रश्नोत्तर,कविता भजन,अनुभव,की प्रस्तुति की गई विद्यार्थियों को पेन डायरी भी दिया गया जिनमें प्रमुखकल्याणी, सुभद्रा,जानकी,सविता भूपेंद्र नागेश,कार्यक्रम का संचालन शीतल ध्रुव समाजसेवी ने किया आभार व्यक्त डिप्टी धनेश सिन्हा ने किया कार्यक्रम को सफल बनाने में ग्रामीण नीलकंठ डूंगर सिंह ठाकुर बुद्धुराम संतु राम निषाद श्यामलाल प्रकाश निर्मलकर का विशेष सहयोग रहा।

सत्यपाल मलिक ने सुझाया बीजेपी को हराने का फॉर्मूला, कहा-

मायावती को वोट ट्रांसफर करने से रोकना होगा

लोकसभा चुनाव से पहले सभी राजनीतिक दलों ने अपनी-अपनी तैयारियां तेज कर दी है. इस बीच पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक न विपक्ष को एक ऐसा फॉर्मूला सुझाया है जिसके आधार पर 2024 में बीजेपी को पटखनी दी जा सकती है. सत्यपाल मलिक ने बीजेपी पर हमला बोलते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव में बीजेपी को हराने के लिए विपक्ष को पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह का फॉर्मूला अपनाना होगा. इसके साथ ही उन्होंने बसपा सुप्रीमो मायावती को लेकर भी कहा कि विपक्ष को ध्यान रखना होगा कि कही मायावती अपना वोट बीजेपी के पक्ष में ट्रांसफर न करवा दें.

पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने बीजेपी पर हमला बोलते हुए हाल ही में हिमाचल चुनाव में कांग्रेस की जीत और बिहार में आरजेडी-जेडीयू के साथ आने का स्वागत किया वहीं गुजरात के नतीजों पर जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि गुजरात तो भाजपा का ही है उसमें हार-जीत का कोई मतलब नहीं हैं. उन्होंने कहा कि बीजेपी ने आने वाले दिनों को लेकर जो सोचा है वो नहीं रहने वाला हैं. इसके साथ ही उन्होंने लोकसभा चुनाव में बीजेपी को हराने के लिए विपक्ष का पूर्व पीएम वी पी सिंह के फॉर्मूले को अपनाने की बात कही. सत्यपाल मलिक ने कहा कि विपक्ष

कभी एकजुट नहीं हो सकता क्योंकि उसमें सभी प्रधानमंत्री पद के दावेदार हैं. इसका एक ही हल सिर्फ वीपी सिंह का फॉर्मूला ही है. सभी दल मिलकर तय कर लें कि बीजेपी उम्मीदवार को किस सीट पर कौन सबसे मजबूत टक्कर दे सकता है और इसी आधार पर अपने उम्मीदवार उतारें. अगर एक उम्मीदवार के आगे विपक्ष एक कैंडिडेट को ही उतारता है तो बीजेपी के लिए मुश्किल हो जाएगी. पूर्व राज्यपाल ने इस दौरान राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की भी तारीफ की और कहा कि राहुल गांधी ने दक्षिण भारत से बीजेपी को बाहर कर दिया है वहां पर बीजेपी की कोई चर्चा भी नहीं कर रहा है. लेकिन अगर उत्तर भारत में वन टू वन हो जाए तो बीजेपी के लिए मुश्किल हो जाएगा. सत्यपाल मलिक ने कहा कि विपक्ष अगर कांग्रेस के साथ कोई मोर्चा बनाए तो ही उसका फायदा होगा. कांग्रेस साथ हुई तो अल्पसंख्यक वोट बंटेगा नहीं. अखिलेश यादव वे अति पिछड़ों को अपने साथ जोड़ लिया है. ओबीसी आरक्षण पर हाईकोर्ट के फैसले के बाद जाट और मुस्लिम समाज पूरी तरह विपक्ष के साथ जुड़ जाएगा. ऐसे में सिर्फ मायावती को हैंडल करना जरुरी होगा. वो कहीं अपना वोट बैंक बीजेपी को ट्रांसफर न कर दें, इसे रोकना जरूरी होगा.

मेडिकेयर मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल का संचालन बंदज्ष्टस्नाह ने भेजा नोटिस

संवाददाता हेमचंद नागेश कि रिपोर्ट

गरियाबंद। जिला कलेक्टर कार्यालय एवं जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय के बिल्कुल नजदीक संचालित अवैध अस्पताल का संचालन मीडिया की सुर्खियों में आने के बाद बंद कर दिया गया है। पिछले कुछ महीनों से जिला मुख्यालय के वरिष्ठ जिला अधिकारियों के कार्यालय के नजदीक ही एक लॉज में बगैर सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के संचालित हो रहे मेडिकेयर मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल को सीएमएचओ की नोटिस के बाद बंद कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि एक लॉज के हाल में पार्टीशन के सहारे ,बिना रजिस्ट्रेशन मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल का नाम देकर अस्पताल चलाया जा रहा था, गंभीर मरीजों की भर्ती कर उनका ईलाज और ऑपरेशन भी किया जा रहा था , और तो और इस कथित मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल में बिना मापदंड सी आर्म्स हाई एक्सरे मशीन का उपयोग भी किया जा रहा था, जिसके रेडिएशन से मानव शरीर व गर्भवती महिलाओं को गंभीर नुकसान की संभावना होती है। विदित हो कि स्थानीय सक्षम अधिकारियों के द्वारा इस अस्पताल को लगातार नजर अंदाज किया जा रहा था, किन्तु मीडिया की सुर्खियों में आने के बाद कार्यवाही करनी पड़ी।

प्रधानमंत्री मोदी की मां का निधन, सीएम ने जताया दुःख

दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की माता हीराबेन मोदी के निधन पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने दुख जताया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां हीरा बा (हीराबेन) का शुक्रवार को निधन हो गया. उन्होंने इसी साल जून में अपने जीवन के 100वें वर्ष में प्रवेश किया था. उनका जन्म 18 जून 1923 को मेहसाणा में हुआ था. हीराबेन की शादी दामोदरदास मूलचंद मोदी से हुई थी. दामोदरदास तब चाय बेचा करते थे. हीराबेन और दामोदरदास की 6 संतानें हुईं. नरेंद्र मोदी तीसरे नंबर पर थे. हीराबेन और दामोदरदास की दूसरी संतानें हैं - अमृत मोदी, पंकज मोदी, प्रह्लाद मोदी, सोमा मोदी और बेटी वसंती बेन हंसमुखलाल मोदी.

हीराबेन ताउम्र संघर्षशील महिला रहीं- पीएम मोदी कई बार अपनी मां के संघर्षों का भावुक अंदाज में जिक्र कर चुके हैं. साल 2015 में फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग के साथ बातचीत के दौरान पीएम मोदी ने अपने मां के संघर्षों को याद किया था. तब उन्होंने कहा था कि, मेरे पिताजी के निधन के बाद मां हमारा गुजारा करने और पेट भरने के लिए दूसरों के घरों में जाकर बर्तन साफ करती थीं और पानी भरती थीं. तब मां की तकलीफों को याद करते हुए पीएम मोदी भावुक हो रो पड़े थे. पीएम मोदी के भाई प्रह्लाद मोदी ने हीराबेन के 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर आजतक के साथ बातचीत में अपनी मां की जीवन की कहानी साझा की थी. प्रह्लाद मोदी ने बताया था कि उनकी मां जब मात्र 6 महीने की थी तब उनकी नानी उन्हें छोड़कर चल बसीं थीं. उनका संघर्ष तो इतिहास ही जानता है. प्रह्लाद मोदी ने कहा कि मेरी नानी के गुजर जाने के बाद उनके नाना ने दूसरी शादी की. फिर उनसे जो बच्चे हुए उनके पालन पोषण की जिम्मेदारी भी हीरा बा पर ही थी. वे कहते हैं कि उनकी मां छोटी उम्र में ही मां बन चुकी थीं. भाग्य को इससे ही संतोष न था. नाना जी की दूसरी पत्नी गुजर गईं, फिर उन्होंने तीसरी शादी की. उनसे बच्चे हुए. उनका जिम्मा भी हीराबेन पर ही आया. फिर उन्होंने अपने बच्चों को भी पाला. इसके बावजूद उन्हें अपनी जिंदगी से शिकायत न रही.

राज्यसभा के लिए कौन-कौन से नेता निर्विरोध चुने गए कपिल सिब्बल, जयंत चौधरी और मीसा भारती भी लिस्ट में

शुक्रवार को राज्यसभा के लिए 41 उम्मीदवारों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया गया. इन उम्मीदवारों में राजीव शुक्ला, कपिल सिब्बल समेत राष्ट्रीय जनता दल की मीसा भारती और राष्ट्रीय लोकदल के जयंत चौधरी आदि सहित कई नाम शामिल हैं. गौरतलब है कि निर्विरोध निवाचिंत उम्मीदवारों में उत्तर प्रदेश से सभी 11, बिहार से पांच, मध्य प्रदेश से तीन, छतीसगढ, पंजाब और झारखंड से दो-दो और उत्तराखंड से एक उम्मीदवार बिना किसी मुकाबले के निर्वांचित घोषित किए गए हैं. चलिए जानते हैं किस प्रदेश से किस पार्टी के उम्मीदवार निर्विरोध चुने गए हैं.

यूपी में कितने उम्मीदावर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए- बता दें कि उत्तर प्रदेश के 11 निर्विरोध निर्वाचित उम्मीवारों में से बीजेपी के आठ प्रत्याशी हैं. जबकि समाजवादी पार्टी और रालोद के एक-एक प्रत्याशी हैं. वहीं निर्दलीय सिब्बल हैं. जिन नेताओं को निर्विरोध निर्वाचित किया गया है उनमें रालोद के जयंत चौधरी, समाजवादी पार्टी के जावेद अली खान और बीजेपी के दर्शन सिंह, बाबू राम निषाद, मिथिलेश कुमार, राधा मोहन दल अग्रवाल, के.लक्ष्मण, लक्ष्मीकांत वाजपेयी, सुरेंद्र सिंह नागर, संगीता यादव शामिल हैं.

बिहार से कितने उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए- बिहार राज्य से भी सभी पांच उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं. इनमें राजद से मीसा भारती और फैयाज अहमद, बीजेपी से सतीश चंद्र दूबे और शंभू शरण पटेल व जेडीयू से खीरू महतो शामिल हैं. गौरतलब है कि लालू प्रसाद यादव की बेटी मीसा भारती और बीजेपी के दुबे लगातार दूसरी बार राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुने लगे हैं.

पंजाब से कितने उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए- पंजाब से निर्विरोध चुने गए दो उम्मीदवारों में आप प्रत्याशी और पर्यावरणविद बलबीर सिंह सीचेवाल और उद्यमी-सामाजिक कार्यकर्ता विक्रमजीत सिंह साहनी शामिल हैं.

छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड से कितने उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए- छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के दोनों प्रत्याशी राजीव शुक्ला और रंजीत रंजन निर्विरोध चुने गए हैं. वहीं उत्तराखंड से बीजेपी प्रत्याशी कल्पना सैनी निर्विरोध निर्वाचित की गई है.

मध्य प्रदेश से कितने उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए- बीजेपी की सुमित्रा वाल्मीकि और कविता पाटीदार व कांग्रेस के विवेक तंखा का निर्विरोध निर्वाचन हुआ है.विवेक तन्खा राज्यसभा के लिए लगातार दूसरी बार चुने गए हैं. उनका कार्यकाल अगले महीने खत्म हो रहा था. कांग्रेस ने उनपर भरोसा जताते हुए एक बार फिर राज्य सभा भेजा है. वहीं जबलपुर की सुमित्रा वाल्मीकि और इंदौर की कविता पाटीदार पहली बार राज्य सभा के लिए चुनी गई हैं. दलित और पिछड़े समाज से आने वाली ये दोनों नेता बीजेपी की स्थानीय स्तर की नेता हैं. बीजेपी ने उन्हें राज्य सभा चुनाव का उम्मीदवार बनाकर चौंका दिया था.

महाराष्ट्र, राजस्थान और हरियाणा की सीटों के लिए 10 जून को है चुनाव- गौरतलब है कि पंद्रह राज्यों की 57 राज्यसभा सीटों के लिए 10 जून को चुनाव निर्धारित हैं. ये सीटें जून और अगस्त में अलग-अलग तारीखो पर सदस्यों की सेवानिवृत्ति के कारण खाली हो जाएंगी. वहीं शुक्रवार को नामांकन वापस लेने की लास्ट डेट थी. इसी के साथ बता दें कि महाराष्ट्र राज्य की 6 राज्यसभा सीट, राजस्थान की 4 सीट और हरियाणा की दो सीटों के लिए 10 जून को चुनाव होंगे और उसी दिन नतीजे भी घोषित कर दिए जाएंगे.

200 सीटर कन्या छात्रावास में कार्य पर पूर्व की भांति रखने बाबत जिला कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद। युवा कांग्रेस बिद्रानवागढ विधान सभा महासचिव एव वैद्य राज संघ जिला सचिव एव मगधा यादव समाज जिला सह सचिव गरियाबंद यशवंत कुमार यादव के नेतृत्व मे जिला मुख्यालय गरियाबंद जनदर्शन कार्यक्रम मे वर्तमान मे संचालित 200 सिटर कन्या छात्रावास मे कार्य पर पूर्व की भाती रखने बाबत ईश्वरीय यादव नीता सेन सावित्री यादव गौरी यादव ने ज्ञापन सौपा ने आवेदन मे बताया की पूर्व मे कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी गरियाबंद के आदेश क्रमांक /1662/2017-2018 के आदेशानुसार राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान कन्या छात्रावास के 100 सीटर मैनपुर

विकासखंड मैनपुर जिला गरियाबंद (छ ग) मे कलेक्टर दर पर हम सभी को नियुक्त किया गया था हम लोगो के द्वारा उक्त छात्रावास मे वर्ष 2017 से 2021 तक कार्य कर हमारे परिवार का जिवको पार्जन कर रहे थे कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी जिला गरियाबंद के आदेश क्रमांक/3421 दिनांक 28/9/2021 के अनुसार हम लोगो को 100 सिटर कन्या छात्रावास मैनपुर से पृथक / कार्य मुक्त कर दिया गया है जिससे हमारे समक्ष जिवको पार्जन की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है वर्तमान मे उक्त छात्रावास को 100 सीटर कि जगह 200 सिटर कर संचालित किया जा रहा है किन्तु हम सभी चौकीदार रसोईया सहायक रसोईया को कार्य पर नही रखा गया है यहा की अधिक छात्राएं होने से अधिक कर्म चारी कि आवश्यकता होती है ज्ञापन देते हुए बताए है कि 200 सीटर उन्नयन छात्रावास मे हम लोगो को पूर्व की भाती कलेक्टर दर पर यहा नही तो दुसरे जगह मे यथावथ पदस्थ करने कि माग को लेकर ईश्वरीय यादव गौरी यादव सावित्री यादव नीता सेन ने ज्ञापन सौपा गया।

नीना गुप्ता को खुद पर पड़ी मां-बहन की गालियों पर आती है हंसी! क्योंकि...

बॉलीवुड में अक्सर देखने को मिला है कि एक से बढ़कर एक बेहतरीन कलाकारों को अपने शुरुआती दिनों में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है. इस लिस्ट में बेहतरीन अदाकारा नीना गुप्ता का नाम भी शामिल है, जिनकी कहानी काफी हैरान करने वाली है. दरअसल, एक्ट्रेस को एक डायरेक्टर ने सरेआम मां-बहन की गाली दे दी थी. लेकिन बेबाक नीना उस वक्त रोने लगी थी. लेकिन अब उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता. एक्ट्रेस ने इसके पीछे का कारण भी बताया है, जिस बारे में हम आपको बताने वाले हैं. गौरतलब है कि नीना को अभी लोगों के बीच काफी पहचान मिली, लेकिन वो काफी समय से इंडस्ट्री में हैं. एक्ट्रेस ने सन् 1980 में बॉलीवुड इंडस्ट्री में कदम रख दिया था. हालांकि, उस दौरान उन्हें कई फिल्मों में काफी छोटे रोल मिले थे. ऐसी ही एक फिल्म में उनका काफी छोटा रोल था. जिसमें उन्हें केवल दो-तीन डायलॉग ही बोलने थे. लेकिन फिर शूट वाले दिन एक्ट्रेस को पता चला कि उनका वो सीन भी काट दिया गया है. फिर क्या, परेशान होकर नीना डायरेक्टर के पास पहुंची. लेकिन निर्देशक ने उस पर कोई पॉजीटिव प्रतिक्रिया देने के बाजय उन्हें मां-बहन की गालियां देनी शुरू कर दी. एक्ट्रेस बताती हैं कि वहां विनोद खन्ना, जूही चावला समेत कई लोग मौजूद थे. ऐसे में नीना को इतना बुरा लगा कि उन्होंने वहीं रोना शुरू कर दिया. आपको बता दें कि एक्ट्रेस ने इस बात का खुलासा अपने एक इंटरव्यू में किया था. हालांकि, किस्सा साझा करने के बाद नीना हंसते हुए कहती हैं कि अब इस तरह का वर्क कल्चर नहीं रहा. उनका कहना है कि अगर आज उनके साथ ऐसा होता, तो शायद वैसी प्रतिक्रिया न होती. एक्ट्रेस आगे कहती हैं कि अब कोई उन्हें अपशब्द नहीं कह सकता. खैर, आपको बता दें कि हाल ही में एक्ट्रेस फिल्म ऊंचाई में दिखाई दी थी. जिसमें उन्होंने अमिताभ बच्चन, अनुपम खेर, डैनी डेंजोंग्पा, बोमन ईरानी और सारिका के साथ स्क्रीन शेयर किया था. बॉक्स ऑफिस पर इसका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा, लेकिन फिल्म इतना कलेक्शन करने में कामयाब रही कि इसे कमर्शियल फेलियर नहीं कहा जा सकता. आने वाले दिनों में नीना फिल्म ग्वालियर में दिखने वाली हैं.

क्या पठान में बदलेगा दीपिका की भगवा बिकनी का रंग?

शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण स्टारर फिल्म पठान के गाने को लेकर विवाद चल रहा है. इसके पहले गाने बेशर्म के रिलीज होने के बाद से ही हंगामा जारी है. गाने में दीपिका की भगवा बिकनी पर देश में खूब राजनीति हुई. वहीं अब इस फिल्म पर सेंसर बोर्ड की तरफ से नया अपडेट सामने आया है. सेंसर बोर्ड ने फिल्म मेकर्स से फिल्म में कुछ बदलाव करने की सलाह दी है. पठान फिल्म सेंसर सर्टिफिकेशन के लिए सेंसर बोर्ड पहुंची. जिसके बाद सेंसर बोर्ड ने फिल्म में कुछ बदलाव करने के सुझाव दिए हैं. फिल्म की हर चीज को बहुत ही बारिकी से देखा गया, उसके बाद ही ये बदलाव करने को कहा है. ये बदलाव फिल्म और गाने को लेकर हैं. हालांकि इस बात को लेकर अभी पूरी तरह से पुख्ता तौर पर कोई पुष्टि नहीं की गई है, लेकिन अंदाजा लगाया जा रहा है ये बदलाव भगवा, बिकनी को लेकर हैं. साथ ही कमिटी ने बदलाव करने के बाद कमिटी के पास इसका रिवाइज्ड वर्जन सबमिट करने को कहा है. कमिटी के मुताबिक, बदलाव के बाद ही फिल्म को रिलीज करने की अनुमति दी जाएगी. सीबीएफसी के चेयरपर्सन प्रसून जोशी ने कहा, सीबीएफसी हमेशा से ही रचनात्मकता और संवेदनशीलता के बीच तालमेल बनाने का काम करती है. हमें विश्वास है कि बातचीत के जरिए मुद्दों का समाधान ढूंढा जा सकता है. मुझे यह दोहराना चाहिए कि हमारी संस्कृति और आस्था गौरवशाली, जटिल और सूक्ष्म है और हमें सावधान रहना होगा कि यह सामान्य ज्ञान से परिभाषित न हो जाए. पठान अगले साल 25 जनवरी को रिलीज हो जाएगी. बेशर्म गाने परसबसे पहले मपी के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने सवाल उठाया था. उन्होंने कहा, इस गाने के जरिए हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहंचाई जा रही है. मंत्री ने गाने को लेकर कड़ा विरोध जताया है. उनका कहना है कि फिल्म से ये गाना हटाना होगा, और अगर नहीं हटा तो वो इस राज्य में फिल्म को रिलीज होने नहीं देंगे. वहीं नरोत्तम मिश्रा के अलावा ट्विटर यूजर्स ने भी बॉयकॉट पठान हैशटैग का समर्थन करते हुए शाहरुख की टीशर्ट को लेकर आपत्ति जताई है. यूजर्स ने कहा शाहरुख हरे रंग की टीशर्ट पहनकर भगवा बिकनी पहने हुए दीपिका के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं. देश में इसका बड़े स्तर पर विरोध किया जा रहा है इस गाने में दीपिका और शाहरुख के अलावा जॉन अब्राहम भी हैं. अब तक फिल्म के दो गाने और टीजर रिलीज हो चुके हैं, जल्द ही ये फिल्म भी रिलीज हो जाएगी. फिल्म हिंदी भाषा के अलावा तमिल और तेलुगु में भी रिलीज होगी.

नेताओं के लिए बलि का बकरा हैं हम..., बॉलीवुड में बैन होने पर फिर भड़कीं माहिरा खान

पाकिस्तानी एक्ट्रेस माहिरा खान अपनी दमदार एक्टिंग और बेबाकी के लिए खास पहचान रखती हैं. माहिरा की न सिर्फ पड़ोसी देश बल्कि हिंदुस्तान में भी जबरदस्त फैन-फॉलोइंग है. इन दिनों अपनी ब्लॉकबस्टर फिल्म मौला जट की सफलता को एंजॉय कर रही माहिरा ने बॉलीवुड में पाकिस्तानी कलाकारों के बैन होने के मुद्दे पर भड़ास निकाली है. उरी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक तनाव के कारण पाकिस्तानी एक्टर्स और सिंगर्स को भारत में काम करने से बैन कर दिया गया था. इसी वजह से साल 2017 में बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान के साथ फिल्म रईस में काम कर चुकीं माहिरा खान को दोबारा बॉलीवुड में काम नहीं मिला है. हालांकि इंटरनेशनल इवेंट्स में वह बॉलीवुड स्टार्स से मिलती रहती हैं. इस मुद्दे पर एक्ट्रेस ने अपनी राय दी है. उन्होंने कहा कि, भारतीय और पाकिस्तानी दोनों ही कलाकार बलि का बकरा बनाए जाते हैं. एक्ट्रेस ने वैराइटी नाम की वेबसाइट को दिए एक इंटरव्यू में कहा, कलाकारों को भारत के साथ-साथ पाकिस्तान में भी सॉफ्ट टारगेट माना जाता है. यूं कहिए कि दोनों देशों के कलाकार राजनेताओं के लिए बलि का बकरा है. भारत में काम करने के अपने अनुभव के बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस ने कहा, भारत में काम करने का मेरा समय सबसे अद्भुत था.. मैं अभी भी बहुत से लोगों के संपर्क में हूं और वहां बहुत प्यार है. दुर्भाग्य से, हम सॉफ्ट टारगेट हैं, चाहे हम यहां पाकिस्तान में हों, चाहे वे वहां भारत में हों, क्योंकि हम कलाकार हैं, और हम कला के उस धागे से जुड़े हुए हैं, जो एक-दूसरे से कहीं न कहीं मिलते हैं. इसलिए हम किसी भी चीज से ज्यादा एक-दूसरे का ख्याल रखने की कोशिश कर रहे हैं. अब भी, हम सोशल मीडिया पर जो कुछ भी लिखते हैं, उससे बहुत सावधान रहते हैं. ऐसा नहीं है कि हम एक दूसरे से बात नहीं करते, ऐसा नहीं है कि हम एक-दूसरे को बर्थडे विश नहीं करते. ऐसा नहीं है कि हम अलग-अलग देशों में एक-दूसरे से नहीं मिलते.यह सिर्फ इतना है कि हम सच में केवल अपनी रक्षा नहीं कर रहे हैं बल्कि एक दूसरे की रक्षा कर रहे हैं. माहिरा ने आगे कहा कि इसके पीछे खासतौर से राजनीति है. दुर्भाग्य से, यह पॉलिटिक्स है, यह एक पर्सनल समस्या नहीं है. दोनों तरफ ही जब किसी को बलि का बकरा चाहिए होगा हम हमेशा सबसे पहले होंगे.. लेकिन यह बेहतर हो जाता है. मान लीजिए कि अगर सत्ता में कोई है जो हमें सॉफ्ट टारगेट के रूप में इस्तेमाल नहीं करे तो बहुत अच्छा होगा. क्या आप दोनों देशों के बीच कला के मामले में साथ काम करने की कल्पना कर सकते हैं। यह कितना प्यारा होगा.

ट्विंकल खन्ना से नाराज होकर आमिर खान थप्पड़ मारने वाले थे

मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान और बॉलीवुड एक्ट्रेस ट्विंकल खन्ना के बीच अच्छी दोस्ती है. आमिर और ट्विंकल को एक साथ फिल्म मेला में देखा गया था. यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हुई थी. एक बार ट्विंकल खन्ना ने अपने बुक लॉन्च इवेंट पर इस बात का खुलासा किया था कि अक्षय कुमार की वजह से आमिर खान उन्हें थप्पड़ मारने वाले थे. ट्विंकल खन्ना ने अपनी बुक मिसेज फनीबोन्स के लॉन्च इवेंट के दौरान इस वाकये का जिक्र किया था. ट्विंकल खन्ना के इस बुक लॉन्च इवेंट में अक्षय कुमार, आमिर खान, करण जोहर सब एक साथ मौजूद साथ थे. इस दौरान करण ने आमिर से ट्विंकल की एक्टिंग पर सवाल किया, तो आमिर खान के जवाब देने से पहले एक्ट्रेस खुद बोल पड़ीं. उन्होंने बताया कि कैसे अक्षय की वजह से उन्हें आमिर खान से बस मार पड़ने ही वाली थी. दरअसल, ट्विंकल ने बताया कि वो ठीक तरह से शूटिंग नहीं कर पा रही थीं. यह देखकर आमिर ने उनसे पूछा, आप कर क्या रही हो, आप इस तरह से व्यवहार क्यों कर रही होड़ काम पर भी आपका कोई ध्यान नहीं है÷. आमिर की बात का जवाब देते हुए ट्विंकल बोलीं, मैं अक्षय कुमार के बारे में सोच रही हूं. यह सुनते ही आमिर ने उन पर हाथ उठा दिया था. वहीं, ट्विंकल के बारे में आमिर कहते हैं कि एक्ट्रेस ने उनका मिसयूज किया. उनके मुताबिक, उन्होंने कई बार उनका फायदा उठाया है. आमिर ने बताया कि ट्विंकल ने अक्षय के साथ अपनी शादी पर उन्हें वीडियोग्राफर बना दिया था. ट्विंकल ने आमिर से कहा था कि शादी में आकर वो शूटिंग करें. इसके अलावा ट्विंकल ने आमिर के बारे में एक और खुलासा किया था. एक्ट्रेस ने बताया कि मेला की शूटिंग के दौरान एक बार उन्होंने आमिर को चट्टान के पीछे रोते हुए देखा था. ट्विंकल ने बताया कि आमिर डायरेक्टर को एक सीन समझाने गए थे, लेकिन जब उनकी नहीं सुनी गई तो वे रोने लगे.

नफरत छोड़ो भारत जोड़ो के गगनभेदी नारों के साथ जौरा विधानसभा की भारत जोड़ो यात्रा पहुंची सुजानघड़ी

भारत जोड़ो यात्रा के दौरान लिया बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद असहाय, बीमार- दुखी का जाना हाल

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

कैलारस –जौरा विधानसभा क्षेत्र में निरंतर 1 नवंबर से चल रही भारत जोड़ो यात्रा आज कैलारस क्षेत्र मथुरा से जाने वाली के शेखपुर से प्रारंभ हुई जो मधीपुरा, लोडुपुरा, सुजानगड़ी पहुंची इस दौरान यात्रा का नेतृत्व कर रहे वरिष्ठ कांग्रेस नेता जिला पंचायत सदस्य हरि सिंह कुशवाहा ब्लॉक कांग्रेस कमेटी जौरा के अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह सिकरवार चिंटू भैया ने यात्रा के दौरान ग्रामीण जनों का हाल जाना जन समस्याओं से रूबरू हुए इस दौरान नेता गणों ने वृद्ध जनों से आशीर्वाद लिया और गांव में पीड़ति व्यक्ति असहाय दुखी बीमार व्यक्तियों का हाल जानकर उन्हें हर संभव मदद का भरोसा दिलाया यह बता दें कि इस दौरान यात्रा का नेतृत्व कर रहे नेता गणों का ग्राम शेखपुर के ग्रामीणों और मद्दीपुरा के ग्रामीण बंधुओं द्वारा माल्यार्पण कर शॉल श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया यह बता दें कि ग्राम सुजानगढ़ ई में नवनिर्वाचित सरपंच अमर सिंह धाकड़ द्वारा राम जानकी मंदिर सुजानगढी पर नेतागण हरि सिंह कुशवाहा भानु प्रताप सिंह सिकरवार चिंटू भैया का साफा बांधकर माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भानु प्रताप सिंह सिकरवार चिंटू भैया ने अपने उद्बोधन में कहा कि जौरा विधानसभा अति पिछड़ी विधानसभा है कहने को केंद्र प्रदेश में समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं किसी की भी बात सुनी नहीं जा रही डंडे से सरकार चल रही है हम जनता के हितों के लिए

और जोरा में भाजपा ही सत्तासीन है बावजूद इसके भी आज जौरा विधानसभा निरंतर लड़ते रहेंगे और जनता को उसका हक अधिकार दिलाने के लिए कैसे भी संघर्ष के लिए तैयार हैं! कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पंचायत सदस्य हरि सिंह कुशवाहा ने अपने उद्बोधन में कहा कि जौरा विधानसभा में हमारी यात्रा को पूर्व कैबिनेट मंत्री जयवर्धन सिंह बाबा ने 1 नवंबर को जोरा से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था उनके मार्गदर्शन में और वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं के निर्देशन में जौरा विधानसभा के ब्लॉक अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह सिकरवार पिंटू भैया और मेरे द्वारा पूरी विधानसभा क्षेत्र में भारत जोड़ो यात्रा गांधी चौक पाल कार्यक्रम किया जा रहा है इस दौरान क्षेत्र में जो भी समस्याएं हमारे सम्मुख आ रही हैं चाहे वह फर्जी बिजली बिलों का सवाल हो या मुख्यमंत्री विवाह सहायता योजना की बात हो और जान वैकल्पिक नीतियों को हम प्रमुखता से उठाएंगे और कमलनाथ जी के सम्मुख अपने क्षेत्र की समस्याओं को रखेंगे ताकि आमजन की समस्याओं का निराकरण हो सके और प्रदेश की भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों को उजागर किया जा सके! इस अवसर पर कार्यक्रम में तिलक सिंह कुशवाहा रामविलास धाकड़ सियाराम धाकड़ अमर सिंह धाकड़ सरपंच रमेश कुशवाहा रानी खान पार्वती जाटव सहित सैकड़ों व्यक्ति यात्रा में शामिल रहे।

अटल रत्न सम्मान समारोह से सम्मानित हुए अर्पित गुप्ता

गणतंत्र की जड़ों को सींचने का कार्य करती है पत्रकारिता: अर्पित गुप्ता

पुष्पांजली टुडे न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर। गणतंत्र की जड़ों को सींचने का कार्य पत्रकारिता यह बात ग्वालियर में आयोजित अटल रत्न सम्मान समारोह के दौरान लेखक,समाजसेवी,पत्रकार अर्पित गुप्ता ने कही।उन्होंने मीडिया की जीवंतता को लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत बताया।उन्होंने कहा कि व्यवसायिकता के इस दौर में भी बहुत से पत्र-पत्रिकाएं और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया चैनल स्वस्थ पत्रकारिता के मूल्यों की पालना कर रहे हैं,जो सराहनीय है।दरअसल मप्र के ग्वालियर शहर के सिटी सेंटर स्तिथ होटल सिल्वर ओक में प्रेस मीडिया पत्रकार कल्याण संघ द्वारा अटल रत्न सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।जिसमें शहर व बाहर से आये हुए पत्रकार व समाजसेवियों का संस्था के द्वारा सम्मान किया गया।जिस दौरान लेखक,समाजसेवी व पत्रकार अर्पित गुप्ता का सम्मान किया गया।कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में ग्वालियर नगर निगम की महापौर शोभा सिकरवार,ग्वालियर ट्रैफिक डीएसपी नरेश अन्नोटिया व प्रेस मीडिया पत्रकार कल्याण संघ के प्रमुख रविंद्र पवैया व अन्य पदाधिकारी मौजूद रहेायह आयोजन ग्वालियर की शान भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था।जिसमे अटल जी के जीवन के ऊपर प्रकाश डाला गया और उनके पदचिन्हों पर चलने की शपथ ली गई।सम्मान कार्यक्रम के दौरान अर्पित गुप्ता ने कहा कि अटल जी पर समस्त ग्वालियर वासियो को गर्व है क्योंकि ग्वालियर शहर की मूल पहचान उन्ही से है। अटल जी एक बेहतरीन कवि थे।वही उन्होंने पत्रकारो के लिए कहा कि मीडिया की विश्वसनीयता और साख को बनाए रखने के लिए

जरूरी है कि हम सब सच के साथ रहें और पारदर्शिता के साथ निष्पक्ष रिपोर्टिंग करें।यहां बताना मुनासिव होगा कि अर्पित गुप्ता को पहले भी समाजसेवा,लेखनी व पत्रिकारिता के क्षेत्र में कई अवार्ड मिल चुके हैं।जिसमे वर्ष 2018 में राजस्थान जयपुर में उन्हें साहित्यकार सम्मान,वर्ष 2019 में हरियाणा जिले में साहित्यकार सम्मान से नवाजा है चुका है।इसके साथ ही उन्हें दौसा(राजस्थान), ग्वालियर, दतिया, भिंड आदि जिलो में भी सम्मानित किया जा चुका है।अर्पित गुप्ता पत्रकारिता के साथ साथ समाजसेवा भी करते हैं एवं वह एक बेहतरीन लेखक भी हैं।प्रेस मीडिया पत्रकार कल्याण संघ के द्वारा सम्मानित होने पर अर्पित गुप्ता ने पूरी टीम का आभार व्यक्त किया।

रोड़ के डामरीकरण के लिए शहर वासियों के साथ पार्षद ने दिया ज्ञापन

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर
अभिषेक कुशवाह

सिरोंज। वार्ड नंबर 1 के पार्षद रामदयाल विश्वकर्मा के द्वारा अनेक लोगों के साथ शुक्रवार को नगर पालिका पहुंचकर नगर पालिका सीएमओ को रोड के डामरीकरण को लेकर ज्ञापन दिया जिसमें उन्होंने बताया कि रामश्याम रेस्टॉरेट से लेकर बासौदा नाके की नहर की पुलिया तक रोड़ अति क्षतिग्रस्त हो गया है जिससे आसपास रहने वाले लोगों रहना का दुष्वार हो रहा है। आये दिन वाहनों के आवागमन के कारण गड्ढो में से निकलकर गिट्टीया लोगों के घरो तक पहुचती है जिससे किसी भी अप्रिय दुर्घटना कि संम्भावना हमेशा बनी रहती है ईश्वर न करें कभी कोई ऐसी दुर्घटना घटे वही उन्होंने शीघ्र कार्य न कराए जाने पर आंदोलन की बात कहीं इस दौरान सुरेंद्र रघुवंशी नरेंद्र पाटीदार गोविंद चौहान सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

तेजस समाज सेवा समिति सेक्टर बैठक हुई आयोजित

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर
अभिषेक कुशवाह

सिरोंज। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की नवांकुर संस्था तेजस समाज सेवा समिति सब्दलपुर ताल द्वारा ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों के साथ सेक्टर बैठक ग्राम पंचायत देहरी मे देहरी सरपंच माजिद खान की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें तेजस समाज सेवा समिति की प्रतिनिधि मोहन रघुवंशी ने बताया कि हमारे द्वारा लगातार सेक्टर बैठके आयोजित की जाती है जिसमें हम नशा मुक्ति आदर्श ग्राम स्वच्छता शिक्षा अन्य विषय पर चर्चा की गई इस दौरान प्रस्फुटन प्रतिनिधि एवं ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

कन्हार गांव के बाहर पेड़ से 50 वर्षीय व्यक्ति फांसी लगाकर दी जान

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

पहाड़गढ़ थाना क्षेत्र के गांव कन्हार में अज्ञात व्यक्ति फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली मामला रात के समय का है शुक्रवार की सुबह 10 के टाइम पर खेत का मालिक अपने खेत पर गया तो उसने देखा की एक 50 साल का व्यक्ति पेड़ से लटका है उसने तत्काल सूचना कन्हार चौकी प्रभारी को दी चौकी प्रभारी ने मौके पर जाकर देखा तो एक व्यक्ति पेड़ से लड़का मिला था पुलिस ने शव को पेड़ से नीचे उतारा कर पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू की तो पता चला की यह व्यक्ति बाहर का है पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है खबर लिखे जाने तक व्यक्ति की पहचान नहीं हो सकी।

बहेला, लांजी, भानेगांव में संपन्न हुआ निशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर

रितेश कटरे ब्युरो चीफ
पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

महावीर इंटरनेशनल लांजी द्वारा रीजन-9 डिप्टी डायरेक्टर एवं चेयरमैन लांजी श्री विशाल राउत खोंगल ने बताया की शिविर में

प्रतिमाह की 30 तारीख को पुर्व नियोजित शिविर के तहत 30 दिसंबर को बहेला, लांजी एवं भानेगांव में निःशुल्क मोतियाबिंद शिविर का आयोजन किया गया तथा चिन्हित किए गए मोतियाबिंद मरीजों को संस्था की सारी सुविधाओं के माध्यम से ऑपरेशन के लिए प्रस्थान किया गया। महावीर इंटरनेशनल 402 लोगों का पंजीयन किया गया तथा 135 मरीज मोतियाबिंद चयनित किया गये। ग्राम बहेला में 25 मरीज, लांजी में 50 एवं भानेगांव में 60 मरीज मोतियाबिंद के चिन्हित किए गए। कुछ मरीज बीपी शुगर में कारण अनफिट पाए गए। सभी महावीर सदस्यों के सहयोग से क्षेत्र के मोतियाबिंद से पीड़ति व्यक्तियों की मदद के लिए हर संभव मदद प्रयास जो संभव हो किया जा रहा है निशुल्क मोतियाबिंद की जांच मे संस्था के प्रशिक्षक डॉ कर्मवीर सिंह, इंद्र कुमार राजा भूते एवं अरशद खान के द्वारा उनकी आंखों की जांच एवं उनके स्वास्थ्य की जांच निशुल्क बीपी शुगर तथा संबंधित रोगों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर विशाल राउत खोंगल डिप्टी डायरेक्टर × चेयरमेन लांजी, फनिंद्र दुरुगकर, अरशद खान, इंद्र कुमार राजा भूते , नेहल गौतम सरपंच, प्रवीण उमरे, रविंद्र पारधी, दादू नाकतोड़े, पवन खरखाटे, रुपेश रावते ,राधेश्याम नखाते, शिवम् नखाते, बंटी खरखाटे, भूपेश करांहे, नंदकिशोर बिलावर, मोनू अग्रवाल, ब्रजेश अग्रवाल, नवीन टेंभरे, नितिन हरिनखेडे, शिवम् नखाते ,एवं महावीर इंटरनेशनल लांजी के अन्य सभी सदस्य उपस्थित रहे।

सुभाष चौक में पूर्व विधायक समरीते ने किया जनसभा को संबोधित

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

बालाघाट। जिले की लांजी विधानसभा के पूर्व विधायक क्रांतिकारी नेता किशोर समरीते ने नगर के सुभाष चौक में एक सभा को आयोजित किया जिसमें क्षेत्र का सबसे गर्म मुद्दा डबल मनी के मामले में सरकार, पुलिस विभाग, प्रशासन और वर्तमान विधायक के उपर जमकर बरसे। बता दे कि कुछ दिन पहले किशोर समरीते ने जनहित मांगों को लेकर संसद भवन को उड़ाने की धमकी दी थी जिसके बाद उन्हे दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। लगभग 90 दिन जेल में रहने के बाद हाल ही में जेल से रिहा हुए है। जेल से रिहा होने के बाद शुक्रवार को समरीते ने अपनी सभा आयोजित की, इस दौरान सैकड़ों लोग मौजूद रहे। सभा के दौरान समरीते ने राज्यपाल के नाम ज्ञापन भी सौंपा है। ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया है कि मध्यप्रदेश में राज्य सरकार की लापरवाही से तहसील लांजी में चिटफंड कंपनियों द्वारा अपना मुख्यालय बनाकर मध्यप्रदेश के बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, सिवनी तथा महाराष्ट्र राज्य के गोंदिया, भंडारा, नागपुर व छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव, दुर्ग, रायपुर जिलों में लगभग 15 हजार करोड़ों की ठगी की है इस मामले को पश्चिम बंगाल के शारदा चिटफंड से भी बड़ा बताया है। वहीं लांजी विधानसभा क्षेत्र के 75 हजार लोग इस ठगी के शिकार हैं। यह राशि 35 सौ करोड़ से अधिक है। इस मामले से लांजी क्षेत्र में युद्ध जैसे हालात हैं, जनता में भारी आक्रोश है, लोग आत्महत्या कर रहे हैं तथा इस मामले में लिप्त एजेंटों की हो रही है। मध्यप्रदेश राज्य शासन तथा जिला प्रशासन मौन है। इस संबंध में संयुक्त क्रांति पार्टी ने मांग की है कि मध्यप्रदेश राज्य शासन एवं राज्य सरकार इस मामले की जांच के लिए सेवा निर्वत उच्च न्यायालय के न्यायधीश की अध्यक्षता में कमीश्नर नियुक्त करें जो 1 माह में जांच कर राज्य शासन को रिपोर्ट सौंपी जाए। और लांजी क्षेत्र की जनता से जो करोड़ों की ठगी की गई यह राशि मध्य प्रदेश राज्य सरकार उड़ीसा राज्य की तर्ज पर लांजी क्षेत्र की जनता को लौटाए तथा अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करे।

डबल मनी की जांच करने वालों पर हो सीबीआई जांच

- समरीते पूर्व विधायक-किशोर समरीते ने भरी सभा में बालाघाट जिले के एसपी समीर सौरभ से पूछा की डबल मनी मामले में जितने घरों में आप ने छापेमारी की, क्या उन घरों के सर्च वारंट आपने लिएड़ और इस छापामार कार्रवाई के बाद जो रूपया जप्त हुआ है उसका पंचनामा आपके द्वारा बनाया गया थाड़ और सीआरपीसी 154 के तहत जो एफआईआर होती है वह एफआईआर करने वाला कौन थाड़

आपने कहा कि जो इस केस का इंक्वायरी ऑफिसर है उसी ने पूरे इस केस में छापेमारी और जब्ती की। लेकिन एफआईआर नहीं की गई । पुलिस ने तमाम लोगों के घर में जो छापामार कार्रवाई की है उसकी अगर जब्ती बनाते, पंचनामा बनाते तो वह पैसा अदालत में जमा होता और जनता की जेब में जाता, जनता को वापस मिलता। पुलिस की जेब में नहीं जाता। इसके साथ ही पुलिस को कहा कि हजारों करोड़ों रुपए का यह मामला लोगों से आप ने छापामार कार्रवाई करके लाए, यह तमाम पुलिस ऑफिसर जिन लोगों ने इस चिटफंड मामले में कार्रवाई की है इन सब के खिलाफ सीबीआई जांच होनी चाहिए।

भगवान राम की कथा सुन श्रधालु हुए भावविभोर। दंदरौआ धाम शताब्दिपुरम में चल रही श्री राम कथा।

उमाकान्त शर्मा दैनिक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। ग्वालियर के शताब्दिपुरम स्थित श्री दंदरौआ धाम में आयोजित श्री राम कथा में कथा व्यास द्वारा रामभक्तों को भव्य एवं संगीतमय कथा का रसपान कराया जा रहा है कथा सुनकर भक्त भाव विभोर हो गए। विगत 24 दिसम्बर से श्री राम कथा का आयोजन शुरू हुआ यह कथा आठ दिन तक चलेगी। कथा व्यास पंडित श्री सच्चिदानंद जी महाराज जीने श्री राम के जीवन काल का गुणगान बहुत ही संगीतमय अंदाज में कराया। कथा पारीक्षत श्रीमती शीला श्री रामगोविंद दंडोतिया निवासी ग्राम बहुआ को बनाया गया है। कथा में विगत दिवस श्री श्री 1008 श्री राम दास जी महाराज दंदरौआ धाम भिण्ड ने कथा का रसपान किया एवं अपने शिष्य कथा व्यास को आशीर्वाद प्रदान किया। कथा में कई लोग समाजसेवी श्री राम भक्त श्री दंदरौआ हनुमान जी भक्त भूपेंद्र कटारे शिक्षक आशीष दंडोतिया गिर्राज दंडोतिया शिवानंद शर्मा विकास शर्मा अमर शर्मा संजीव समाधिया सुनील पचौरी संजीव शर्मा पत्रकार दीपक शर्मा दीपू पंडित जी तथा समस्त

शताब्दीपुरम निवासी लोगों ने श्री हनुमान जी महाराज दंदरौआ धाम शताब्दीपुरम ग्वालियर की महिलाओं और बेटियों श्री महाराज जी ने कहा कि श्रीराम कथा ब्रह्म विद्या का विज्ञान है । यह व्यक्ति को भावमय जीवन की ओर ले जाकर परमात्मा का चिंतन कराता हुआ, परमात्मा की प्राप्ति सहज रूप से करा देता है, यही श्रीराम कथा शास्त्र की विशेषता है। श्री राम ज्ञानदीप है, श्री राम भगवान की शब्द मूर्ति है, अमृतसर अमृतसर की कथा सुनने मात्र से जीव के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

पूर्व मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा के अधूरे सपनों को पूर्ण कर स्वर्णिम सिरोंज बनाना है: विधायक उमाकांत शर्मा

49 लाख रुपए की लागत के 5 आंगनवाड़ी भवनों का भूमि पूजन किया

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर,अभिषेक कुशवाह

सिरोंज। पूर्व मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने काला पानी कहे जाने वाले सिरोंज लटेरी क्षेत्र को उबारकर स्वर्णिम क्षेत्र बनाया है। आज शहर में चारों ओर पक्की सड़कें हमें दिखाई दे रही हैं। अभी हमें शहर के विकास के लिए बहुत कार्य करने हैं। लक्ष्मीकांत जी के अधूरे सपनों को पूर्ण कर के क्षेत्र को स्वर्णिम विकास की ओर ले जाना है। क्षेत्र के विकास के लिए हमारे पास अभी करोड़ों की योजनाएं हैं जिसे शीघ्र ही धरातल पर साकार रूप प्रदान किया जाएगा। यह बात विधायक उमाकांत शर्मा ने नगर मे 49 लाख रुपए की लागत से 5 आंगनवाड़ी भवनों का भूमि पूजन कार्यक्रम के दौरान कही। इस दौरान कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाजपा जिला महामंत्री बलवीर सिंह रघुवंशी, नगरपालिका अध्यक्ष मनमोहन साहू, नपा उपाध्यक्ष मनोज साईनाथ, भाजपा नगरीय निकाय प्रकोष्ठ जिला संयोजक रमेश यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता रमेश श्रीवास्तव, अशोक निगम, श्रीराम सूर्यवंशी,पार्षद हरिचरण अहिरवार,रीना सचिन शर्मा, आमना बी राजा मियां, वर्षा बलजीत यादव भाजयुमो नगर पूर्व अध्यक्ष सीताराम कुशवाह, वरिष्ठ भाजपा नेता रामचरण शाक्य, पप्पू त्यागी, मंसाराम जाटव, शब्बीर भाई, राकेश यादव, भूरा भाई, मेहताब सिंह रघुवंशी, भूपेश शर्मा, बृजमोहन नामदेव, राजीव गिरदोनिया,बाबूलाल चौकसे, राम भरोसे अहिरवार, बनवारी दास बैरागी सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे

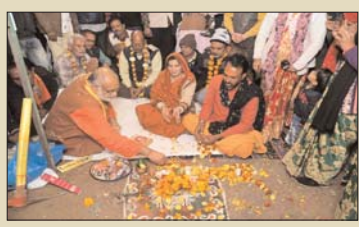

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका का किया सम्मान- वही कार्यक्रम के दौरान विधायक श्री शर्मा के द्वारा वार्ड की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका का सम्मान किया गया जिसमें उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं मैं जो बच्चों के प्रति ममत्व है , प्रेम है वह प्रणाम करने योग्य है वही वार्ड 19 में शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर में, वार्ड 21 अयोध्या बस्ती में वार्ड दो निर्मला कान्वेंट के सामने, वार्ड 3 शासकीय माध्यमिक शाला हाजीपुर के पास और वार्ड 10 में नयापुरा स्कूल परिसर में आंगनबाड़ी का शुभारंभ हुआ।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478